जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 3 के विद्यार्थियों के अधिगम अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका के उपयोग का प्रयास (गणित)''।

अनुसंधानकर्ता

श्री विक्रम सिंह, व.अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, काकलासर, सरदारशहर, चूरू

1. शोध का शीर्षक :– '' कक्षा 3 के विद्यार्थियों के अधिगम अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका के उपयोग का प्रयास (गणित)।''
2. योजना समस्या की पृष्ठभूमि :–
   कोविड–19 के परिपेक्ष्य में शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य कक्षा कक्षीय गतिविधियां संपादित नही हो सकने के कारण ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम अन्तराल का अन्य कारण अभिभावकों की सामाजिक आर्थिक स्थितियां भी है। कोविड काल में संचार उपकरणों की उपलब्धता के बाद भी शैक्षिक उद्देश्य से इन उपकरणों का सही उपयोग नही किया गया। अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों पर विद्यालय समय पश्चात् उनकी सही देखरेख न करना। अभिभावकों का अशिक्षित होना, बालकों में रूचि की कमी, अनियमितता, विद्यालय में बालक का असहज महसुस करना, संकोच, भय, तनाव भी अधिगम अन्तराल का कारण बना है। पाठ्यपुस्तकों में क्रियात्मक पक्ष न्यून होना भी अधिगम अन्तराल का कारण बना है।
3. क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य :–
   - कक्षा 3 के विद्यार्थियों में गणित विषय मं अधिगम अन्तराल के कारण जानना।
   - विद्यार्थियों में गणित विषय में रूचि बढ़ाने का प्रयास करना।
   - विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धता बढ़ाने का प्रयास करना।
   - विद्यार्थियों को गणित की मूलभूत संक्रियाओ से अवगत करवाना।
   - गणितीय सक्रियाओ का विद्यार्थियों के व्यावहारिक जीवन में उपयोग।
   - क्रियात्मक पक्ष से सीखाने को बढ़ावा देगें।
   - स्तरानुसार प्रश्नों का निर्माण कर गणित सीखाना।
   - विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति को नियमित करना।
4. समस्या का क्षेत्र :– रा.उ.मा.वि., काकलासर, सरदारशहर।

क्र.स.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1.	पारिवारिक कारण	अभिभावक सम्पर्क
2.	शारीरिक कारण	हावभाव, चेष्टा अवलोकन
3.	अनियमितता	छात्र उपस्थिति रजिस्टर
4.	रूचि का अभाव	अभ्यासपुस्तिका/कार्यपुस्तिका

5. क्रियात्मक परिकल्पनाः–
   पाठ्यपुस्तक के स्तरानुसार क्रियात्मक पक्ष न्यून होने के कारण कार्यपुस्तिका में अभ्यास के माध्यम से सीखेगा। कार्यपुस्तिका में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, चित्रों तथा कार्यो का उल्लेख होता है जिससे विद्यार्थियों में गणितीय कौशलों का विकास होता है। स्तर के अनुसार कार्यपत्रकों के माध्यम से विद्यार्थियों के स्तर को बढ़ाकर अधिगम कम किया जा सकेगा।
6. सीमांकन :–
   कक्षा 3 के विद्यार्थी। स्थान– राउमावि., काकलासर।
7. क्षेत्र :–
   शैक्षिक।
8. शोधविधिः–
   सर्वेक्षण, निदानात्मक/उपचारात्मक।
9. क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्ययोजना–

क्र.स.	कार्ययोजना बिन्दु	कार्य	साधन / उपकरण	समय
1.	वार्तालाप	विषयाध्यापक,विद्यार्थी तथा अभिभावक	वार्तालाप	1 दिन
2.	प्रश्नपत्र	कार्यपत्रकों पर अभ्यास	पश्नपत्रक	1 दिन
3.	अवलोकन	कार्यपुस्तिका का अवलोकन, कार्यपुस्तिका में कार्य करवाना, गणितीय संक्रियाओं को करवाना।	कार्यपुस्तिका	4 दिन
4.	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र	1 दिन

10. दत्त संकलन :–

उक्त उपकरणों के आधार पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, काकलासर, सरदारशहर के कक्षा 3 के 24 विद्यार्थियों पर अनुसंधान कार्य किया गया है। अनुसंधान से प्राप्त आंकड़ों का संकलन इनके आधार पर सारणीयन का कार्य किया गया है।

पूर्व परख में विद्यार्थियों का स्तर

विवरण	अंक	विद्यार्थी	प्रतिशत
कमजोर	1–7	14	58
औसत	8–13	6	25
मेधावी	14–20	4	17

पूर्व परख माध्यिका

अंक	बारम्बारता	संचयी बारम्बारता
1–7	14	14
8–13	6	20
14–20	4	24

माध्यिका N / 2 = 24/2 = 12 वां पद

12 वां पद संचयी आवृति वाले 1 से 7 अंक वाले वर्ण का है।

पश्चात् परख

विवरण	अंक	विद्यार्थी	प्रतिशत
कमजोर	1–7	10	42
औसत	8–13	8	33
मेधावी	14–20	6	25

पश्चात् परख माध्यिका

अंक	बारम्बारता	संचयी बारम्बारता
1–7	10	10
8–13	8	18

14–20	6	24

माध्यिका N/2 = 24/2 = 12 वां पद

12 वां पद संचयी आवृति में 8 से 13 अंक वाले वर्ण का है।

11. विश्लेषण :–

क्रियात्मक अनुसंधान दत्त संकलन से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि गणित अधिगम स्तर अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका के उपयोग से पूर्व परख से प्राप्त आंकड़ों व पश्चात् परख के आकड़ों से तुलना करने पर सुधार हुआ है। पूर्व परख के कमजोर, औसत व मेघावी विद्यार्थियों के प्रतिशतता में अन्तर आया है।

12. सुझाव :–

कक्षा में विद्यार्थियों की रूचि का ध्यान रखकर गतिविधि आधारित अभ्यास करवाने में कार्यपुस्तिका लाभदायक है अतः कार्यपुस्तिका में कार्यपत्रक पर अभ्यास करवाने से अधिगम अन्तराल निराकरण में सहयोग मिलता है। कार्यपुस्तिकाओं को और अधिक महत्व दिया जाकर विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के साथ ही वितरित करना चाहिए। शिक्षक द्वारा इन कार्यपुस्तिकाओं पर अभ्यास पर विशेष ध्यान/महत्व दिया जाना बच्चों के लिए क्रांतिकारी सिद्ध होगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''अभ्यास पुस्तिकाओं की सहायता से विद्यार्थियों के हस्तलेखन प्रोन्नत करने का प्रयास।''

अनुसंधानकर्ता

शारदा दईया, अध्यापक ले–2, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणासर, चूरू

शीर्षकः–

''अभ्यास पुस्तिकाओं की सहायता से विद्यार्थियों के हस्तलेखन प्रोन्नत करने का प्रयास।''

पृष्ठभूमि / औचित्य / महत्व :–

बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की महती भूमिका है, शिक्षा के द्वारा बालक के अन्तर्निहित गुणों का विकास होता है जिससे बालक अपनी समस्याओं और भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकता है और मानव अभिव्यक्ति दो रूप होते है। 1. लिखित 2. मौखिक ।

मौखिक रूप से कही गई बात थोड़ी देर में ही समाप्त हो जाती है। जबकी लिखित अभिव्यक्ति स्थायी रूप से उसके पास रहती है लेकिन अशुद्ध एवं अस्पष्ट हस्तलेखन अपूर्ण अभिव्यक्ति है। सुन्दर एवं स्पष्ट हस्तलेख प्रस्तुतीकरण का आईना होता है। जब विभिन्न कक्षा कक्ष को अवलोकन किया तो पाया कि कुछ वर्तनी संबंधी तो अक्षरों का सही विन्यास लिख पाने में असहजता महसूस कर रहे थे, तो कुछ स्वयं का लिखा हुआ भी पढ़ नहीं पा रहे थे और मात्राओं की गलतियां कर रहे थे। यह समस्या विद्यार्थी के भविष्य में विकट ना बने इस हेतु उन कमियों को दूर करने के लिए क्रियात्मक शोध की आवश्यकता महसूस हुई क्योंकि यदि विद्यार्थी का हस्तलेखन प्रभावशाली नहीं होगा तो उसका वास्तविक आकलन नहीं हो पायेगा।

उद्देश्य :–

मेरे शोध के दौरान समस्या के रूप में कुछ दत प्रश्न मेरे समक्ष उत्पन्न हुए जिनका समाधान करने हेतू मैने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए जो इस प्रकार है –

1. शब्दों के बीच पर्याप्त दूरी एवं मात्रा को सही ढंग से लिख पाना।
2. वर्तनी संबंधी त्रुटियों में अपेक्षित सुधार होना।
3. अभ्यास पुस्तिकाओं में अनुलेख से सुन्दर व स्पष्ट हस्तलेख लिखना।

परिकल्पना :–

मेरे द्वारा किए गए क्रियात्मक अनुसंधान में पूर्व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू मैने निम्न संभावित परिकल्पनाएं बनायी, जो इस प्रकार है –

1. शिक्षक द्वारा बार–बार लिखित कार्य अभ्यास करवाकर छात्रों की मात्रा संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है।
2. वर्तनी सुधार हेतू सुलेख व अनुलेख विधि का प्रयोग कर त्रुटियों को दूर किया जा सकता है।
3. अभ्यास पुस्तिकाओं में सुन्दर हस्तलेखन को उत्प्रेरणा व इनाम देकर विद्यार्थी को और अधिक रूचि जागृत की जा सकती है।

समस्या के संभावित कारण :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा लिखित कार्यो में लापरवाही करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन
2.	गृहकार्य में औपचारिकता	अवलोकन
3.	शारीरिक विकार	अवलोकन

4.	विषयाध्यापकों द्वारा लिखित कार्य बारीकी से नहीं जांचना।	अर्द्धवार्षिक उत्तर पुस्तिकाएं

परिकल्पना के परीक्षण हेतू कार्ययोजना :–

क्र.स.	बिन्दु	कार्य जो करना है	उपकरण	अवधि
1.	अभ्यास पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य का प्रतिदिन अभ्यास	अनवरत अभ्यास	अभ्यास पुस्तिका, दस्तावेज अवलोकन	4 दिन
2.	वर्तनी एवं मात्रा संबंधी सुधार करवाया	श्रुतिलेख, अनुलेख	नोटबूक	4 दिन
3.	सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन कर सुन्दर व स्पष्ट हस्तलेख को इनाम दिया जाना	मूल्यांकन	उत्तरपुस्तिका	2 दिन

शोध उपकरण एवं सांख्यिकी :–

इस क्रियात्मक शोध में समस्या से संबंधित कारणों एवं तथ्यों का संकलन मेरे द्वारा प्रयुक्त शोध उपकरण, गृहकार्य अवलोकन और दस्तावेज को प्रयुक्त किया गया। उक्त उपकरणों के प्रयोग से अन्वेषण कार्यो में प्राप्त तथ्यों का संकलन कर उन्हें सारणीयन किया गया। इन तथ्यों के आधार पर विश्लेषण के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

क्रियात्मक अनुसंधान क्षेत्र :– शैक्षिक।

न्यादर्श :–

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणासर, चूरू की कक्षा 5 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

शोध विधि :–

मैने क्रियात्मक अनुसंधान के लिए निदानात्मक एवं उपचारात्मक विधि का प्रयोग किया। इस विधि के लिए मैने अवलोकन एवं दस्तावेज का प्रयोग किया।

परीसीमन :–

मेरी समस्या शैक्षिक होने के कारण मैने मेरे विद्यालय की कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों का अवलोकन किया तो महसूस किया कि छात्र वर्तनी, मात्रा एवं अक्षरों के विन्यास संबंधी गलतियां कर रहे थे। और सबसे अधिक कक्षा 5 के छात्रों में देखी गई।

दत संकलन प्रक्रिया :–

मैने इस समस्या से संबंधित तथ्यों को संकलन कर मेरे द्वारा शोध उपकरण जैसे गृहकार्य अवलोकन, उत्तर पुस्तिका, दस्तावेज का प्रयोग किया गया। इन शोध उपकरणों के माध्यम से समस्या का निदान करने का प्रयास किया गया। अवलोकन अभ्यास पुस्तिकाओं को देखकर उनके आधार पर कक्षा 5 का अवलोकन किया गया जिसमें मैने 10 बच्चों को शामिल किया।

क्र. स.	प्रश्न सं	पूर्व स्थिति	पश्च स्थिति	पूर्व स्थिति प्रतिशत	पश्च स्थिति प्रतिशत	धनात्मक प्रगति
1.	बच्चों का हस्तलेखन सुन्दर है।	2	8	20	80	60
2.	बच्चे ऋ को लिखने में समर्थ है।	1	6	10	60	50
3.	बच्चे कठिन वर्ण ढ, त्र , ह लिखने में	3	9	30	90	60

	समर्थ है।					
4.	अक्षर विन्यास लिखने में समर्थ है।	4	6	40	60	20
5.	व्याकरण संबंधी अशुद्धि रहित लिखने में समर्थ है।	2	8	20	80	60
6.	वर्तनी संबंधी अशुद्धि रहित लिखने में समर्थ है।	3	7	30	70	40
				150	440	

दत विश्लेषण :–

अध्यापक प्रश्नावली के द्वारा दत संकलन तथ्यों के आधार पर दत विश्लेषण किया गया। प्रश्न सं. 1 के दतों के परिणामों से लक्षित है कि पूर्व अभ्यास से 20 प्रतिशत विद्यार्थी ही सुन्दर एवं स्पष्ट लेख लिख रहे थे लेकिन अभ्यास के बाद 80 प्रतिशत छात्रों में सुधार हुआ। प्रश्न सं. 2 के दत परिणामों से स्पष्ट होता है कि अभ्यास से पूर्व 10 प्रतिशत छात्र ही ऋ लिखने में समर्थ थे लेकिन अभ्यास के पश्चात 60 प्रतिशत छात्र ऋ वर्ण सही लिखने में समर्थ हुए। प्रश्न सं. 3 के दत परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट लक्षित होता है कि पहले मात्र 30 प्रतिशत विद्यार्थी ही कठिन वर्णो को लिखने में सहज थे लेकिन शिक्षक के निरन्तर अभ्यास से 90 प्रतिशत बच्चों में सुधार हुआ। प्रश्न सं. 4 के दत परिणामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अभ्यास से पूर्व 40 प्रतिशत विद्यार्थी ही अक्षर विन्यास लिखने में समर्थ थे लेकिन अभ्यास पश्चात 60 विद्यार्थियों ने यह लक्ष्य प्राप्त कर लिया। प्रश्न सं. 5 के दत परिणामों के विश्लेषण से लक्षित होता है कि अभ्यास से पूर्व 20 प्रतिशत विद्यार्थी व्याकरण संबंधी अशुद्धि नही कर रहे थे शेष व्याकरण संबंधी त्रुटियां कर रहे थे जिन्हें अनवरत अभ्यास से सुधार किया और 80 प्रतिशत सफलता दर्ज की। प्रश्न सं. 6 के दत परिणामों के विश्लेषण से लक्षित होता है कि पहले मात्र 30 विद्यार्थी ही वर्तनी अशुद्धि रहित लिख रहे थे। शिक्षक के बार–बार अभ्यास से छात्रों 70 प्रतिशत सुधार आया और उन्होने वर्तनी संबंधी अशुद्धि नहीं की।

सारणी के आकड़ों का गणितीय विश्लेषण :–

पूर्व अभ्यास औसत प्रतिशत – 150 / 10 = 15 प्रतिशत

पश्च अभ्यास औसत प्रतिशत – 440 / 10 = 44 प्रतिशत

उपलब्धि प्राप्त – 44–15 = 29 प्रतिशत

धनात्मक प्रगति – 29 प्रतिशत

निष्कर्ष :–

शिक्षक द्वारा प्राप्त दत विश्लेषण के उपरान्त निम्न निष्कर्ष निकले –

1. कक्षा कक्ष में निरन्तर अभ्यास से बालक की त्रुटियों , वर्तनी संबंधी अशुद्धियों में अपेक्षित सुधार हुआ।
2. अनवरत सुलेख व श्रुतिलेख से विद्यार्थी के हस्तलेखन में सुधार निश्चित हुआ।

सुझाव :–

उपरोक्त शोधकार्य के बाद निम्न सुझाव दिए जा सकते है।

1. अभिभावक घर पर बच्चों को पढ़ने का वातावरण प्रदान करे।
2. विद्यार्थियों में उच्चारण एवं शुद्ध लेखन पर प्रोत्साहन को बढ़ावा दिया जाए।

3. व्याकरण संबंधी ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
4. प्रधानाध्यापक द्वारा समय समय पर विद्यार्थियों वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी अशुद्धियों के बारे में चर्चा की जाए ताकि अपेक्षित सुधार हो।

संदर्भ :– संचार साधन।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''रा.उ.मा.वि., दुंकर, बीदासर में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में कार्य पुस्तिकाओं के माध्यम से गुणवतापूर्ण शिक्षण।''

अनुसंधानकर्ता

श्री रजनीश आर्य , अध्यापक ले.–2 , रा.उ.मा.वि., दूंकर, बीदासर, चूरू

शीर्षक :–

'' रा.उ.मा.वि., दुंकर, बीदासर में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में कार्य पुस्तिकाओं के माध्यम से गुणवतापूर्ण शिक्षण।''

प्रस्तावना :–

हमारी समस्त शिक्षण नीतियों का अंतिम उद्देश्य बालक का सर्वागीर्ण विकास रहा है। समय–समय पर प्रस्तावित शिक्षा नीतियों में ऐसी विद्यायें उपयोग लेने का प्रयास किया गया है जिससे बालक कम से कम समय में गुणवतापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर सके। इसी क्रम में राज्य सरकार द्वारा विगत कई बर्षो से विषय विशेषज्ञों की सहायता से अभ्यास पुस्तिकाऐं तैयार करवाई गई हैं। इन अभ्यास पुस्तिकाओं का वितरण सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। विगत तीन सत्र से कोविड महामारी के कारण छात्रों की पढाई में बाधा उत्पन्न हुई है इस कारण से राज्य सरकार द्वारा ऑनलाईन अध्यापन कार्य के विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे है। प्राथमिक स्तर के बालकों द्वारा सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति में कार्यपुस्तिकाओं से कितनी सहायता मिलती है ? क्या सरकार द्वारा वितरित कार्यपुस्तिकाओं का वितरण सार्थक है अथवा नही। क्या अध्यापकों को अध्यापन कार्य में कार्यपुस्तिकाओं का सहयोग मिल रहा है। अध्यापन कार्य में समय व श्रम की बचत के साथ उपागमों की प्राप्ति हो रही है अथवा नही।

शोध की आवश्यकता/उपयोगिता :–

बालक के समग्र शैक्षणिक विकास के लिए प्रदत सभी मानवीय व भौतिक संसाधनों के समुचित उपयोग कर अधिकतम प्राप्ति के उद्देश्य से कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग कर हम कम समय में बालकों को गुणवतापूर्ण शिक्षण कार्य करवा सकते है तथा राज्य सरकार द्वारा प्रदत इस सुविधा के पूर्ण उपयोग से परीक्षा परिणाम में सुधार लाकर लोगों को राजकीय विद्यालयों में अपने बालकों का नामांकन करवाने बाबत प्रेरित कर सकते है। हमारे शोध का विषय चुनने का प्रमुख कारण है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालक गुणवतापूर्ण शिक्षण प्राप्त कर समाज में अपना व सरकारी विद्यालयों का नाम रोशन करें।

उद्देश्य :–

इस क्रियात्मक शोध के उद्देश्य निम्नवत् है–

1. बच्चों में शिक्षण विषयों के प्रति रूचि पैदा होना।
2. अध्यापकों द्वारा कम समय में गुणवतापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
3. अभिभावकों द्वारा निःशुल्क संसाधन प्राप्त कर सरकारी विद्यालयों की प्रशंसा करना।
4. राज्य सरकार द्वारा प्रदान निःशुल्क कार्यपुस्तिकाओं का समुचित उपयोग करना।
5. पिछड़े तथा गरीब बालकों को संसाधन उपलब्ध कराना।

समस्या कथनः–

शोधकर्ता रजनीश आर्य अध्यापक का कथ्न है कि रा.उ.मा.वि., दूंकर में प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं से अध्ययन का विद्यालय में प्रभाव।

परिकल्पना :–

1. प्राथमिक कक्षाओं में वितरित कार्यपुस्तिकाओं के राज्य सरकार से प्राप्ति एवं छात्रों में वितरण रिकार्ड का अध्ययन कर समय पर वितरण करवाया जाना।
2. कार्यपुस्तिकाओं को गुणवतापूर्ण शिक्षण बाबत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।
3. कार्यपुस्तिकाओं से बच्चों के सीखने का आकलन उचित ढ़ग से किया जा सकेगा।
4. वर्चुअल माध्यम से प्राप्त ज्ञान को बालक स्थाई कर सकेगें एवं स्वयं करके सीखने के सिद्धान्त से गुणवतापूर्ण शिक्षण कार्य कर सकेगें।
5. छात्रों में कार्यपुस्तिकाओं के द्वारा स्व–अध्ययन की प्रवृति का विकास हो सकेगा।
6. बालकों में प्रयोगात्मक व सृजनात्मक शक्ति का विकास होगा।
7. बालकों में गृहकार्य समय पर करने की प्रवृति का विकास हो सकेगा।
8. अध्यापक छात्रों के सीखने के प्रतिफल की उपलब्धि का परीक्षण कर सकेगें।

न्यायदर्श :–

उक्त शोध में राउमावि., दूंकर के प्राथमिक कक्षाओं के छात्र, प्राथमिक कक्षाओं को अध्यापन कराने वाले छात्र–छात्राऐं व उनके अभिभावकों को शामिल किया गया।

उपकरण :–

छात्र–छात्राओं को वितरित की गई कार्यपुस्तिकाऐं। छात्रों व अभिभावकों और विषयाध्यापकों से सर्वे

मौक्षिक साक्षात्कार – दो अध्यापकों व 15 अभिभावकों द्वारा।

प्रश्नावली – प्राथमिक कक्षाओं के 50 छात्र–छात्राओं को शामिल करते हुए पूर्व परख प्रश्नावली द्वारा लिया गया।

अवलोकन पत्रक व साक्षात्कार – शोध के पश्चात।

कार्ययोजना का विकास एवं क्रियान्वयन :–

शोधकर्ता द्वारा निम्न लिखित योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन शोधकार्य में किया गया

1. सर्वप्रथम प्राथमिक कक्षाओं का पूर्व परख लिया गया जिसमें कार्यपुस्तिकाओं के समय पर वितरण अध्यापक द्वारा समय पर जांच, कार्यपुस्तिका में जांच में इंगित कमियों में सुधार, छात्र द्वारा कार्यपुस्तिका पूर्ति में दिया गया समय आदि प्रश्नों का समावेश किया गया।

क्र.स.	कारण	अभ्यूक्ति	समयावधि
1.	छात्र–छात्राओं को कार्यपुस्तिकाऐं समय पर मिली है तो उसका प्रभाव या नही मिली तो कारण।	यह देखा गया कि समय पर अभ्यास पुस्तिका वितरण होने पर छात्र के सीखने की गति अधिक है।	1 दिवस
2.	अध्यापक द्वारा कार्यपुस्तिका की समय पर जांच करना एवं छात्र को सुधारात्मक कार्य देना।	छात्र अपनी गलतियों में सुधार कर रहे है तथा शैक्षणिक दक्षताओं को सही तरह से ग्रहण कर रहे है।	2 दिवस
3.	विषयाध्यापकों से कार्यपुस्तिकाओं से शिक्षा पर बातचीत करना।	प्राथमिक कक्षाओं को पढाने वाले अध्यापकों ने बताया कि कार्यपुस्तिकाओं से बालक अधिक सीखता है।	1 दिवस
4.	अभिभावकों से छात्र की शैक्षणिक प्रगति का अवलोकन करने के लिए कहना।	अभिभावकों ने बताया कि छात्र कार्यपुस्तिकाओं में कार्य रूचि लेकर	1 दिवस

		करते है।	
5.	संस्थाप्रधान से शैक्षणिक अवलोकन पर बातचीत।	संस्थाप्रधान ने बताया कि कक्षा पर्यवेक्षण में अध्यापक द्वारा अध्यापन कार्य की गुणवता का सहज आकलन किया जा सकता है।	1 दिवस
6.	पश्च परख	पश्च परख में छात्रों द्वारा प्रश्नावली में उत्तर दिया गया कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में कार्यपुस्तिका मुख्य उपकरण है।	1 दिवस

दंत विश्लेषण एवं सांख्यिकी सर्वे :–

औसत आधार पर शिक्षित साक्षर व निरक्षर अभिभावाकों का चयन कर उनसे बच्चों के घर पर अध्ययन करने , गृहकार्य पूर्ण करने व अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर बातचीत की गई। प्राप्त उत्तरों को सारणीबद्ध कर विश्लेषण में प्राप्त आंकड़ों से निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

निष्कर्ष :–

अभ्यास/कार्यपुस्तिका बच्चों को गुणवतापूर्ण शिक्षण प्रदान करने का उत्तम साधन है। अध्यापनकर्ता द्वारा समय पर जांच कर बालक को अवगत करवा दिया जाए तो बालक रूचिपूर्वक सीखेगें।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं से अधिगम अन्तराल को विलोपित करने का प्रभावी प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती सपना कुमारी, व्याख्याता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोड़ी पट्टा सात्यूं, चूरू

शीर्षक :–

''प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं से अधिगम अन्तराल को विलोपित करने का प्रभावी प्रयास ''।

प्रस्तावना :–

कोरोना वायरस के कारण बीते दो सालों से अस्त व्यस्त चल रही पढ़ाई के नुकसान की भरपाई के लिए प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए कार्यपुस्तिकाओं का वितरण किया गया है। फिलहाल ये कार्यपुस्तिकाएं कक्षा 1 से 8 तक के छात्र–छात्राओं के लिए उनकी बुनियादी दक्षताओं और अधिगम स्तर के आधार पर तैयार की गई हैं। परिषद ने कार्यपुस्तिकाओं को दो भागों में बांटा हैं। जिसके पहले चरण में ब्रिज कोर्स के तहत दो माह तक कार्यपत्रकों पर अभ्यास करवाया जायेगा। इस आधार पर बच्चें का प्राथमिक और समग्र आकलन होगा। जबकि दूसरे चरण में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के अनुरूप अतिरिक्त कक्षाओं के द्वारा वर्ष पर्यंत उपचारात्मक शिक्षण सुविधा दी जायेगी। कोविड –19 के कारण विद्यार्थियों के लिए विद्यालय बंद है। ऐसी स्थिति मे विषय अध्यापकों के द्वारा आओं घर से सीखे–2 कार्यक्रम के तहत प्रत्येक विद्यार्थी के घर पर जाकर उन्हें कार्यपुस्तिका में कार्य करवाना पड़ा है। इस दौरान अध्यापकों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इसके अलावा कार्यपत्रकों पर आकलन की नियमित समीक्षा की जिम्मेदारी भी शिक्षकों की रही है। लेकिन इन सब प्रयासों के बावजूद भी विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में कोई इजाफा नहीं हो रहा है। अतः इस समस्या को दूर करने के लिए ही मैनें इस पर प्रभावशाली कार्य करने का निश्चय किया है।

उत्पति :–

जब मैनें विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं का अवलोकन किया तो मैनें पाया कि कार्यपुस्तिकाओं के प्रति बच्चों में बिल्कुल भी रूचि नहीं है। जब मैनें बच्चों से बात की तो मुझे पता चला कि स्कूल में विषयाध्यापकों द्वारा सभी विषयों का गृहकार्य दे दिया जाता है कि हम कार्यपुस्तिकाओं के लिए समय ही निकाल पाते है। और न ही मम्मी पापा को उन्हें पढ़ाने का समय मिलता है। अतः बच्चों में कार्यपुस्तिकाओं के प्रति रूचि जागृत करने हेतु क्रियात्मक शोधकार्य की आवश्यकता महसूस हुई।

उद्देश्य :–

मेरे शोध के दौरान समस्या के रूप में कुछ दक्ष प्रश्न मेरे समक्ष उत्पन्न हुए जिनका समाधान करने हेतू मैनें कुछ उद्देश्य निर्धारित किये जो इस प्रकार हैं।

1. बच्चों का कार्यपुस्तिकाओं के अभ्यास में रूचि ले पाना।

2. अभिभावकों द्वारा बच्चों को कार्य–पुस्तिका को भरने व समझने में रूचि लेना।

3. बच्चों में कार्यपुस्तिकाओं में दिये गये प्रश्नों की तरह के अन्य प्रश्नों का निर्माण करने की क्षमता उत्पन्न हो पाना।

परिकल्पना :–

मेरे द्वारा किए गए क्रियात्मक अनुसंधान में पूर्व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू मैने निम्न संभावित परिकल्पनाएं बनायी जो इस प्रकार है–

1. कार्यपुस्तिका में दिये अभ्यास प्रश्नों की तरह के बहुत सारे प्रश्न बनाकर बच्चों को अभ्यास करवाया जा सकता है।

2. बच्चों के घर वालों से बात कर उन्हें भी बच्चों को समय देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

3. सप्ताह में दो दिन ऐसे निर्घारित किये जा सकते है जिनमें केवल कार्यपुस्तिका पर ही काम किया जाए।

समस्या के संभावित कारण :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा कार्यपुस्तिकाओं में रूचि न लेना।	कार्यपुस्तिकाएं
2.	बच्चों की समझ बढ़ाने में अभिभावकों की उदासीनता।	अवलोकन
3.	कार्यपुस्तिकाओं का स्तर बच्चों के मानसिक स्तर से मेल नहीं खाना।	कार्यपुस्तिकाएं व अवलोकन

परिकल्पना के परीक्षण हेतू कार्ययोजना :–

क्र.स.	बिन्दु	कार्य जो करना है	उपकरण/साधन	अवधि
1.	कार्यपुस्तिका में कार्य करवाया गया।	अनवरत कार्य	कार्यपुस्तिका	1 कालांश
2.	अभिभावकों से सम्पर्क किया गया।	पी.टी.एम.	कार्यपुस्तिका व उत्तरपुस्तिका	प्रतिसप्ताह
3.	प्रतिसप्ताह एक टेस्ट का आयोजन किया गया।	मूल्यांकन	उतरपुस्तिका	प्रतिसप्ताह

प्रयुक्त शोध उपकरण एवं सांख्यिकी :–

इस क्रियात्मक शोध में समस्या से संबंधित कारणों एवं तथ्यों का संकलन मेरे द्वारा प्रयुक्त शोध उपकरण, गृहकार्य अवलोकन तथा कार्यपुस्तिकाओं के अवलोकन द्वारा किया गया। उक्त उपकरणों के प्रयोग से अन्वेषण कार्य में प्राप्त तथ्यों का संकलन कर उनको सारणीबद्ध किया गया। इन तथ्यों के आधार पर विश्लेषण के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श :–

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोड़ी पट्टा सात्यूं, चूरू की कक्षा 6 के 10 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

शोध विधि :–

मैने क्रियात्मक अनुसंधान के लिए निदानात्मक एवं उपचारात्मक विधि का प्रयोग किया। इस विधि के लिए मैने अवलोकन तथा प्रश्नावली का प्रयोग किया।

परिसीमनः–

मेरी समस्या शैक्षिक होने के कारण मैने मेरे विद्यालय की कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों का अवलोकन किया तो महसूस किया कि छात्रों द्वारा न तो कार्यपुस्तिकाओं में रूचि ली जा रही है और न ही वे उनके मानसिक स्तर के अनुसार हैं और यह समस्या सबसे अधिक कक्षा 6 के विद्यार्थियों में देखी गई।

दत संकलन प्रक्रिया :–

इस समस्या से संबंधित तथ्यों के संकलन हेतु मेरे द्वारा शोध उपकरण जैसे– कार्यपुस्तिकाओं का अवलोकन, टेस्ट लेना आदि दस्तावेजों का प्रयोग किया गया। कार्यपुस्तिकाओं को देखकर उनके आधार पर कक्षा 6 का अवलोकन किया गया। जिसमें मैनें 10 बच्चों को शामिल किया।

इसके लिए मैनें प्रश्नावली विधि का प्रयोग करते हुए पूर्व की स्थिति का पता लगाया।

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	2	–	2
औसत	4–6	4	–	4
कमजोर	1–3	4	–	4

अनुसंधान के पश्चात की स्थिति

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	5	–	5
औसत	4–6	3	–	3
कमजोर	1–3	2	–	2

दत संकलन का विश्लेषण :–

1. कार्यपुस्तिकाओं की कहानियों को रूचिकर रूप से सुनाने से बच्चों में रूचि जागृत की गई।

2. कार्यपुस्तिकाओं के अभ्यास से छात्रों में उनके प्रति और अधिक जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

3. अभिभावकों से मिटिंग कर जब उन्हें प्रेरित किया गया तो उन्होनें भी बच्चों की तरफ ध्यान देकर उन्हें घर पर समय देना शुरू किया।

4. कार्यपुस्तिकाओं में दिये प्रश्नपत्रों का यदि टेस्ट लिया जाये तो बच्चे रूचि लेकर समझते हुए उन्हें याद करने का प्रयास करते हैं।

निष्कर्ष :–

1. मैने बच्चों का टेस्ट लिया तो उन्होने उन प्रश्नों को समझा तथा समझ के आधार पर उत्तर देने की कोशिश की।

2. अभिभावकों से बार–बार मिलकर प्रेरित किया गया तो उन्होने भी उसमें रूचि ली।

3. बच्चों को किये गये कार्य के लिए पुनर्बलन दिया गया तो उन्होने और अधिक रूचि ली।

4. कार्यपुस्तिका में दिये गये प्रश्नों के आधार पर प्रश्नपत्र बनाकर उन्हें दिया गया तो उन्होनें इसमें रूचि दिखाई तथा अच्छे अंक प्राप्त किए।

सुझाव :–

1. बच्चों को किये गये कार्य के लिए बार–बार पुनर्बलन दिया जाना चाहिए।

2. अभिभावकों से प्रति सप्ताह एक मिटिंग अवश्य होनी चाहिए।

3. प्रति सप्ताह एक कक्षा टेस्ट का आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए।

4. सप्ताह में दो दिन केवल कार्यपुस्तिकाओं पर ही कार्य होना चाहिए।

5. एक ही प्रकार के बहुत सारे प्रश्न बनाकर बच्चों से बार–बार अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों में भाषा अधिगम स्तर अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका का उपयोग।(संदर्भ कक्षा 3)''।

अनुसंधानकर्ता

श्री पृथ्वीराज मोची, अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोजरासर, सरदारशहर, चूरू

शोध का विषय :–

''विद्यार्थियों में भाषा अधिगम स्तर अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका का उपयोग।(संदर्भ कक्षा 3)''।

योजना की पृष्ठभूमि/प्रस्तावना/महत्व :–

भाषा परिवर्तनशील है चूंकी विद्यार्थी अनुभव लेकर आता है। इस अनुभव के साथ वह क्रियान्विति हेतु अपना प्रयोग–अनुप्रयोग करने का प्रयास करता है। भाषा को समझने में विद्यार्थी के परिवार की महत्वपूर्ण होती है, वहां से वह भाषायी मूल कुशलताओं को सीखता है। समझकर सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना इस समझ को विकसित करने के दो उपादान हो सकते है। 1. पाठ्यपुस्तक 2. कार्यपुस्तिका।

पाठ्यपुस्तक में क्रियात्मक पक्ष न्यून होने के कारण कार्यपुस्तिका की आवश्कता होती है जिसमें विद्यार्थियों के मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न, चित्र व अन्य कार्यो का उल्लेख किया जाता है।

विद्यार्थियों के अधिगम स्तर अन्तराल के मुख्य कारणों में अभिभावकों का शैक्षिक स्तर कम होना, अभिभावकों की उदासीनता, विद्यार्थियों की अनियमितता, विषयवस्तु में रूचि का अभाव, शारीरिक व सामाजिक परिस्थितियां तथा पाठ्यपुस्तक में क्रियात्मक पक्ष का न्यून होना हो सकता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य :–

I. भाषा को आसानी से सीखना।
II. क्रियात्मक पक्ष को बढ़ावा देना।
III. स्तरानुकूल प्रश्नों का निर्माण कर भाषा को सीखना।
IV. विद्यालय में विद्यार्थियों को उपस्थिति को नियमित करना।
V. गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करना।
VI. विद्यार्थी कैसे सीखेगा ? इस पर पहल करना।

समस्या के कारण व साक्ष्य :–

समस्या	साक्ष्य
पारिवारिक कारण	अभिभावक सम्पर्क
शारीरिक कारण	हाव–भाव, चेष्टाएं अवलोकन
अनियमितता	विद्यार्थी उपस्थिति पंजिका
रूचि का अभाव	अभ्यास पुस्तिका/कार्यपुस्तिका
लापरवाही	पोर्टफोलियों फाईल

विद्यार्थी सुनकर, बोलकर, पढ़कर व लिखने के क्रम में सीखता है इसको विकसित करने के दो साधन है। पाठ्यपुस्तक व कार्यपुस्तिका इनके उपयोग से विद्यार्थी सीखेगा। पाठ्यपुस्तकों में स्तरानुसार क्रियात्मक पक्ष न्यून होने के कारण कार्यपुस्तिका में अभ्यास के माध्यम से सीखेगा। कार्यपुस्तिका में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, चित्रों तथा कार्यो का उल्लेख होता है जिससे विद्यार्थियों की मूल प्रवृतियां खूल कर सामने आयेगी जिससें विद्यार्थी की भाषायी कौशलों का विकास होगा। स्तरानुसार भाषा लेखन से विद्यार्थियों के स्तर को बढ़ाया जायेगा। विद्यार्थी अनुकरण, अवलोकन व श्रवण कर सीखता है। इन बिन्दुओं को पूरा करती है कार्यपुस्तिका यथा सीखने के अन्तराल को पूरा करने में वर्ण, मात्रा, शब्द व

अर्थ तथा उच्चारणों का मुख्य कार्य है जिनको इनमें दिये गये अभ्यास कार्यो से पूरा किया जा सकता है।

क्षेत्र :– शैक्षिक।

शोध विधि :– सर्वेक्षण, निदानात्मक/उपचारात्मक।

क्रियात्मक परिकल्पना परीक्षण हेतु कार्ययोजना :–

भाषा अधिगम स्तर अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका का उपयोग में तथ्य संकलन हेतु वार्तालाप, अवलोकन, प्रश्नोतरी अभ्यास कार्य का उपयोग किया गया है –

क्र.स.	कार्ययोजना बिन्दू	कार्य जो किया गया	उपकरण	समय
1.	वार्तालाप	कक्षाध्यापक/विषयाध्यापक विद्यार्थी व अभिभावक	वार्तालाप	1 दिन
2.	प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र वितरण	प्रश्नपत्र	1 दिन
3.	अवलोकन श्यामपट्ट अभ्यास पुस्तिका पाठ्यपुस्तक	कार्यपुस्तिका/अभ्यास पुस्तिका पोर्टफोलियों, वर्ण, मात्रा व शब्दों पर अभ्यास कार्य । शब्दों का उच्चारण , पाठ को पढ़वाना, सुलेख लिखवाना।	अभ्यास पुस्तिका पाठ्यपुस्तक	4 दिन
4.	प्रश्न–पत्र	प्रश्नपत्र वितरण	प्रश्नपत्र	1 दिन

न्यादर्श :– कक्षा 3 के विद्यार्थी।

दत संकलन :–

उक्त उपकरणों के आधार पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोजरासर के कक्षा 3 के 20 विद्यार्थियों पर अन्वेषण का कार्य किया गया है। अन्वेषण से प्राप्त दतो का संकलन कर इनके आधार पर अंकन से सारणीयन का कार्य किया गया है।

पूर्व परख –

विवरण	अंक	विद्यार्थी संख्यां	प्रतिशत
कमजोर	1–7	10	50
औसत	8–13	06	30
मेधावी	14–20	04	20

माध्यिका :–

माध्यिका N/2

= 20/2 = 10 वां पद

10 वां पद संचयी आकृति वाले 1–7 अंक वाले वर्ग का है।

पश्च परख –

विवरण	अंक	विद्यार्थी संख्यां	प्रतिशत
कमजोर	1–7	06	30
औसत	8–13	08	40
मेधावी	14–20	06	30

माध्यिका :–

माध्यिका N/2

= 20/2 = 10 वां पद

10 वां पद संचयी आकृति वाले 8–13 अंक वाले वर्ग का है।

M_1=8.7 M_2=10.5 O_1=3.66 O_2=3.6

दत विश्लेषण :–

दत संकलन से प्राप्त दतो का संकलन व सारणीयन करने के पश्चात दतो का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि पूर्व परख के पश्चात कार्ययोजनानुसार कार्यपुस्तिका का उपयोग करते हुए कार्य करके पश्चात परख के तथ्यों में काफी अन्तर दिखाई देता है। मेधावी, औसत व कमजोर विद्यार्थियों की संख्या में परिवर्तन स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों के भाषा अधिगम स्तर अन्तराल निराकरण में कार्यपुस्तिका बहुत उपयोगी है।

निष्कर्ष :–

दतो के विश्लेषण करने से पूर्व परीक्षण माध्य, मानक विचलन क्रमशः 8.7, 3.66 तथा पश्च परीक्षण के माध्य, मानक विचलन क्रमशः 10.5, 3.6 है। अतः भाषा अधिगम स्तर अंतराल का निराकरण कार्यपुस्तिका के प्रभावी उपयोग से किया जा सकता है।

सुझाव :–

I. पाठ्यपुस्तक व कार्यपुस्तिका का वितरण साथ–साथ किया जाना चाहिये।
II. पाठ्य स्तरानुसार प्रश्नों का निर्माण कर कार्यपुस्तिका में शामिल किये जावें ताकि विद्यार्थियों को अभ्यास के पर्याप्त अवसर मिल सकें।
III. गतिविधि आधारित शिक्षण के अभ्यास कार्यो को अभ्यास पुस्तिका में दिया जाना चाहिये।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों में हिन्दी शिक्षण अधिगम में अशुद्ध उच्चारण की समस्या के समाधान का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्री ईश्वर सिंह, अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोहिणा, तारानगर, चूरू

1. शीर्षक :–
   ''विद्यार्थियों में हिन्दी शिक्षण अधिगम में अशुद्ध उच्चारण की समस्या के समाधान का प्रयास''।
2. प्रस्तावना :–
   हिन्दी शिक्षण अधिगम में वर्णो व शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना अति आवश्यक है। अशुद्ध उच्चारण से बालक हिन्दी शिक्षण अधिगम पूर्ण नही कर पाते। उक्त समस्या मैने मेरे विद्यालय रा.उ.मा.वि., कोहिणा में कक्षा 6 के विद्यार्थियों में पायी। अशुद्ध उच्चारण की समस्या आगामी कक्षाओं में जाने पर बालकों के लिए हिन्दी भाषा अधिगम में विकट समस्या बन जाती है। भाषा ही सामाजिक जीवन को संयोजित करती है। भाषा हमारी संवाद एवं अभिव्यक्ति का सर्वोतम माध्यम है।
3. शोध समस्या की पृष्ठभूमि :–
   मेरे द्वारा रा.उ.मा.वि., कोहिणा के छात्रों में पाठ वाचन करवाया गया, जिसमें कक्षा 6 के औसत विद्यार्थी कुछ शब्दों का शुद्ध उच्चारण नही कर पा रहे थे। अशुद्ध उच्चारण की समस्या का समाधान करने के लिए मैने एक परिकल्पना की।
4. सीमांकन :–
   रा.उ.मा.वि., कोहिणा, तारानगर के कक्षा 6 के विद्यार्थी।
5. शोध के उद्देश्य :–
   उक्त समस्या के समाधान हेतु मैने निम्न उद्देश्य निर्धारित किये–
   1. विद्यार्थियों द्वारा पाठ वाचन करते समय उच्चारण संबंधी अशुद्धता को दूर करना।
   2. नियमित गृहकार्य में वृद्धि करना।
   3. उच्चारण संबंधी समस्या को दूर करने के लिए अभिभावकों की सहभागिता बढ़ाना।
   4. शिक्षण अधिगम विधि रूचिकर बनाना।
   5. उच्चारण अशुद्धता को दूर कर प्रोत्साहित कर रूचि बढ़ाना।
6. समस्या का क्षेत्र :– शैक्षिक।
7. संभावित कारण :–
   उक्त समस्या के निम्नलिखित संभावित कारण है–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	अध्यापक द्वारा वर्णो का अभ्यास न करवाना।	पाठ वाचन द्वारा पुष्टि
2.	स्थानीय बोली का प्रभाव।	साक्षात्कार
3.	अध्यापक द्वारा उचित शिक्षण विधि का उपयोग न करना	अनुभव, अवलोकन
4.	विद्यार्थियों से अनुकरण एवं पाठ वाचन नहीं करवाना।	अवलोकन
5.	शब्द पहचान योग्यता मे कमी।	अवलोकन
6.	छात्रों द्वारा लिखित कार्य में लापरवाही।	अभ्यास पुस्तिका

8. क्रियात्मक परिकल्पना :–
   1. यदि बालक ग्रमीण परिवेश में घर पर वार्तालाप के समय शुद्ध हिन्दी उच्चारण का उपयोग कर सकते हैं।
   2. पाठ का वाचन कक्षा में करवाने से उच्चारण से संबंधित अशुद्धियां दूर हो सकती हैं।

3. वाचन के समय अशुद्ध उच्चारण करने पर अध्यापक द्वारा दण्ड देने से अशुद्धियां कम हो सकती है।

4. पाठ में आये कठिन शब्दों का मौखिक व श्यामपट्ट पर अभ्यास कार्य करवाने से समस्या का समाधान संभव है।

9. क्रियात्मक अभिकल्प :–

उक्त समस्या के समाधान हेतु निम्न प्रकार से कार्ययोजना बनाई जा सकती है–

क्र.स.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	अशुद्ध उच्चारण करने वाले बालकों की सूचि बनाना	व्याकरण उच्चारण विधि	संबंधित विषयवस्तु	3 दिवस
2.	उच्चारण अशुद्धता को दूर करने के लिए अभ्यास कार्य करवाना	उच्चारण विधि	ब्लेक बोर्ड	2 दिवस
3.	अभ्यास पुस्तिका मूल्यांकन कर उसमें अशुद्ध लिखें शब्दों को शुद्ध लिखवाकर उच्चारण अभ्यास करवाना	निरीक्षण विधि	अभ्यास पुस्तिका	2 दिवस
4.	शुद्ध उच्चारण की प्रतियोगिता करवाना व सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले को पारितोषित देना	पर्यवेक्षण व मूल्यांकन	अभ्यास पुस्तिका पारितोषित	2 दिवस
5.	श्रुतिलेख लिखवाना व अशुद्ध लिखे शब्दों को शुद्ध लिखवाकर उच्चारण अभ्यास करवाना	अवलोकन	शब्द सूचि	2 दिवस

10. दत संकलन :–

अनुसंधान से पूर्व की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	2	3	5
औसत	4–6	3	4	7
कमजोर	1–3	5	6	11

क्रियात्मक अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	4	4	8
औसत	4–6	5	5	10
कमजोर	1–3	1	4	5

शब्दों का शुद्ध उच्चारण करवाया गया, सही उच्चारण का अभ्यास करवाया गया, बार–बार लिखने व बोलने का अभ्यास करवाया गया।

11. दत विश्लेषण :–

1. अनुसंधान से पूर्व जो बालक औसत श्रेणी के थे वे मेधावी श्रेणी में आ गये।

2. अनुसंधान के पश्चात कमजोर श्रेणी के विद्यार्थियों में कमी आयी जो 11 के स्थान पर 5 रह गई।

3. कक्षा में अध्ययन प्रक्रिया में रूचि से भाग लेने लगे।

4. शुद्ध उच्चारण अभिव्यक्त करने में काफी सुधार देखा गया।

12. निष्कर्ष :–

1. बालकों के हिन्दी भाषा शब्दकोष में वृद्धि हुई।

2. परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों की उच्चारण से संबंधित समस्या में कमी आई है।

3. अधिगम सरल एवं सुगम बन गया, अनुसंधान के पश्चात विद्यार्थियों में काफी सुधार देखा गया।

अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

13. सुझावः–

कक्षा 6 के विद्यार्थियों को शब्दों के शुद्ध उच्चारण का मौखिक व लिखित अभ्यास करवाया जावे व समय–समय पर जांच हेतु परख भी लिया जावे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों में शब्द,वाचन,क्ष्मता,विकास का प्रयास (प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए)''।

अनुसंधानकर्ता

श्री विनोद कुमार पटीर, अध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, राणासर बीकान, सरदारशहर, चूरू

1. शीर्षक :–

   '' विद्यार्थियों में शब्द, वाचन, क्षमता, विकास का प्रयास (प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए''।

2. पृष्ठभूमि/प्रस्तावना/औचित्य/महत्व :–

   विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में शब्द, वाचन, क्षमता, विकास संवर्द्धन का विशेष महत्व है क्योकि अधिगम स्तर उनके बिना अधूरा लगता है। प्राथमिक स्नर पर किया गया ज्ञानार्जन चिरस्थायी रहता है और आगामी कक्षाओं में ही नही वरन् जीवनभर शब्दों की महता रहती है यदि विद्यार्थियों का प्राथमिक स्तर अर्थात् नींव ही कमजोर रह जायेगी तो जीवनभर शब्द के वाचन, उच्चारण में अशुद्धता रह जायेगी। विद्यार्थियों की शब्द, वाचन, क्षमता, विकास में बाधक तत्वों को दूर करना है। साथ ही दैनिक जीवन में शब्दों की महता अत्यावश्यक है। इससे विद्यार्थियों के शब्दकोश में अभिवृद्धि होती है। अधिकाधिक शब्दकोश से नवीन ज्ञान में सहायता मिलती है। नये–नये शब्दों के प्रयोग से नई सोच का निर्माण होता है। इससे वाचन क्षमता का सतत विकास होता रहता है। इससे कक्षा 4 तक विद्यार्थियों को स्वाध्याय की प्रेरणा मिलती है। अतः शब्दों का सही उपयोग व सही वाचन वाक्य को सही रूप में सारगर्भित करता है इससे अधिगम स्तर उच्च कोटि का हो जाता है।

3. उद्देश्य :–

   I. विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से संबंधित व पाठ्यपुस्तक से संबंधित शब्द, वाचन, क्षमता विकास का प्रयास से संबंधित समस्या को दूर करना।
   II. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाना है।
   III. विद्यार्थियों को सस्वर वाचन हेतु प्रेरित करना है।
   IV. विद्यार्थियों को शब्दों को लिखकर उनका वाचन करने हेतु प्रोत्साहित कर रूचि पैदा करना है।
   V. विद्यार्थी सफलतम जीवन के लिए शुद्ध शब्द चयन, वाचन आदि की उपयोगिता को सतत अर्जित करना है।
   VI. छात्रों में ध्वनि के अनुसार शब्दों का उच्चारण करवाने का प्रयास करना है।

4. क्षेत्र :– शैक्षणिक । रामावि., राणासर बीकान के कक्षा 4 के विद्यार्थी।

क्र.स.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1.	शब्दों की पहचान निम्न स्तर की होना।	आकलन, पाठ्यपुस्तक, श्यामपट्ट कार्य आदि
2.	वाचन में अशुद्धियां करना	पाठ्यपुस्तक, अभ्यासपुस्तिका, श्यामपट्ट कार्य आदि
3.	लेखन कार्य में लापरवाही करना	गृहकार्य, उतरपुस्तिका आदि

4.	विद्यार्थियों का गृहकार्य आधा–अधूरा एवं लेखन के समय अशुद्धियां	अभ्यासपुस्तिका, अवलोकन आदि

5. क्रियात्मक परिकल्पना :–
   I. विद्यार्थियों को शब्द, वाचन, क्षमता, विकास के प्रयास में समझ हो सकेगी।
   II. शुद्ध रूप से शब्दों का चयन कर सकेंगे।
   III. शुद्ध रूप से उच्चारण कर सकेगे अर्थात् शब्दों का वाचन कर सकेगे।
   IV. अधिकाधिक लेखन कार्य पूर्ण करने से शिक्षण कौशल की समझ हो सकेगी।
6. क्रियात्मक परिकल्पना का परीक्षण हेतु कार्ययोजना :–

क्र.स.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु उच्चारण संबंधी समस्या को दूर करना	पाठ्यपुस्तक द्वारा उच्चारण विधि	पाठ्यपुस्तक	2 दिन
2.	क्रियात्मक अनुसंधान में सहायक सामग्री का चयन करना	गतिविधि आधारित	शब्द वाचन /लेखन द्वारा	2 दिन
3.	शब्द, वाचन, क्षमता, विकास का प्रयास के लिए अभ्यास करना	अभ्यास विधि द्वारा	कार्यपुस्तिका से स्वाध्याय	2 दिन

7. दत संकलन :– प्रश्नोतर विधि व सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया।
   अनुसंधान से पूर्व की स्थिति

वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थी	प्रतिशतता
मेधावी	7–10	09	22
औसत	4–6	12	29
कमजोर	1–3	20	49

   अनुसंधान के बाद की स्थिति

वर्गीकरण	अंकानुसार	विद्यार्थी	प्रतिशतता
मेधावी	7–10	14	34
औसत	4–6	22	54
कमजोर	1–3	05	12

   I. कक्षा 4 के विद्यार्थियों को प्रतिदिन बोलने–लिखने वाले शब्दार्थो का अभ्यास करवाया गया।
   II. अनुसंधान के अन्तर्गत उपचारात्मक विधि द्वारा आकलन किया गया।
   III. शब्दों के वाचन व लेखन अभ्यास का कार्य किया गया।
8. अनुसंधान के पूर्व की स्थिति व अनुसंधान के पश्चात् की स्थिति के आधार पर विश्लेषण :–
   I. अनुसंधान से पूर्व विद्यार्थी औसत स्तर के वे ज्ञान में अभिवृद्धि से विद्यार्थी उच्च स्तर के हो गयो।
   II. विद्यार्थियों का सीखने का स्तर रूचिप्रद हो गया।
   III. प्राथमिक स्तर से ही भाषा के स्तर में परिपक्वता आने लगी।
   IV. अनुसंधान से पूर्व विद्यार्थी कमजोर स्तर के 20 थे जबकि अनुसंधान के पश्चात् मात्र 05 ही विद्यार्थी रह गये।
9. निष्कर्ष :–
   I. उपचारात्मक शिक्षण विधि, कठिन वाचन व लेखन अभ्यास से पश्च परीक्षण के परिणाम सफल प्राप्त हुए।
   II. अधिगम सरल और सुगम हो गया।

III. प्राथमिक स्तरीय हिन्दी भाषा के शब्द कोष में अभिवृद्धि हुई और विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास भी हुआ।

अतः यही क्रियात्मक अनुसंधान स्वीकार किया जाता है।

10. सुझाव :–

कक्षा 4 में शब्द अभ्यास करवाकर प्रतिदिन कक्षा कार्य को लिखवायेगे तथा मौखिक उच्चारण करवाया जायेगा तथा मौखिक परख भी लिया जायेगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 5 के विद्यार्थियों में उपचारात्मक शिक्षण द्वारा पठन क्षमता विकास करने का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती भंवरी तेतरवाल, अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गौरीसर, रतनगढ़, चूरू

1. शीर्षक :–
   '' कक्षा 5 के विद्यार्थियों में उपचारात्मक शिक्षण द्वारा पठन क्षमता विकास करने का प्रयास।''
2. पृष्ठभूमि :–
   शिक्षा जगत में उपचारात्मक शब्द चिकित्सा शास्त्र से लिया गया है जिस प्रकार एक डॉक्टर विभिन्न परीक्षणों के द्वारा रोगी के रोग का कारण पता लगाकर उसकी उचित चिकित्सा करता है। ठीक उसी प्रकार एक कुशल शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों तथा प्रविधि परीक्षणों, निरीक्षण व वार्तालाप के आधार पर शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े व कमजोर बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाकर उसको उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा कठिनाइयों को दूर करके विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता में वृद्धि करता है। सामान्य बालकों की श्रेणी में लाने का प्रयास करता है।
   योकम सिम्पन के अनुसार–''उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है जो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करे। विद्यार्थियों को सीखने में आने वाली कठिनाइयों का पता चल जाता है।''
   भाषा शिक्षण में अशुद्ध उच्चारण में भाषा का स्वरूप बिगड़ता है। हिन्दी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि उसका जैसा अक्षर विन्यास है ठीक वैसे ही उच्चारित की जाती है। इसका मूल कारण क्षेत्रीय भाषाओं का खड़ी बोली पर प्रभाव। भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। अशुद्ध उच्चारण वाले वातावरण के बीच पलने वाला बालक शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता इसी तरह हमने जाना 'नै' के बदले 'ण' का प्रयोग के कारण उच्चारण संबंधी दोष उत्पन्न है। संयुक्ताक्षर के अभाव में हष्ट–पुष्ट जैसे शब्दों को ज्यादातर अशुद्ध लिखते है। भाषा शिक्षण में शैक्षणिक निदान एवं उपचार का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी अपेक्षा करने से न केवल भाषा शिक्षा अपितु पूरी शिक्षा व्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। भाषा शिक्षण के दुष्प्रभाव से बचने के लिए शैक्षणिक निदान एवं उपचार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
3. समस्या उत्पति :–
   शैक्षणिक निदान द्वारा बालकों की कठिनाइयों का पता लगाकर उनको दूर करने का प्रयास।
   आवश्यकता एवं औचित्य :–
   मेरे द्वारा कक्षा 5 के विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण के दौरान पैराग्राफ अध्ययन करवाया गया और छात्रों के द्वारा जब सस्वर वाचन करवाया गया तब अवलोकन के समय मैने यह देखा अधिकांश बच्चे कक्षा में पठन के समय अशुद्ध वाचन कर रहे थे। जैसे– विद्यालय को विधालय,

उन्नति को उन्नती, प्राण को प्रान, हाथ को हात इस प्रकार के शब्दों की अशुद्धि लगभग सभी बच्चों में देखने को मिली। जब मैंने ग्रुप समूह में इनकी हिन्दी भाषा प्रतियोगिता के समय भी मैंने पाया कि बच्चे बोलचाल में भी कठिन शब्दों का गलत उच्चारण करते नजर आये। गृहकार्य मूल्यांकन में अभ्यासपुस्तिका जांच के दौरान भी मुझे बच्चों द्वारा लिखित कार्य में भी इसी प्रकार की अशुद्धियां कर रहे थे। अर्द्धवार्षिक कॉपी जांच की तो उसमें भी छोटी–बड़ी व घुमावदार मात्राओं की त्रुटियां देखने को मिली। कक्षा में जब अलग–अलग छात्र से पाठ पढ़वाया तब देखा कुछ बच्चे जल्दबाजी करते नजर आये। कुछ बच्चों से वर्ण पहचान की समझ का अभाव दिखाई दिया।

इससे यह तो स्पष्ट हो गया क्यों न कोई ऐसा नवाचार किया जाए जिससे बच्चों के अशुद्ध लेखन की समस्या से छुटकारा मिल सके। इसके लिये मैंने बच्चों में पठन क्षमता विकास में उपचारात्मक शिक्षण को आवश्यक एवं उपयोगी मानते हुए गतिविधि शिक्षण का अधिक से अधिक प्रयोग किया।

4. उद्देश्य :–

1. उपचारात्मक शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों के सीखने में आने वाली कठिनाईयों का पता लगाकर पठन क्षमता बढ़ाने का प्रयास।
2. विद्यार्थियों को भाषा संबंधी विकार से दूर करने के लिए प्रेरित करना।
3. विद्यार्थियों की पठन क्षमता में आने वाली समस्याओं के निराकरण का प्रयास करना।

5. क्षेत्र :– शैक्षणिक ।

6. परिकल्पना :–

विद्यार्थियों की पठन क्षमता में आने वाली कठिनाइयां उपचारात्मक के निराकरण से दूर की जा सकती है।

समस्या	कारण	साक्ष्य
शुद्ध उच्चारण संबंधित समस्या अक्षर को शुद्ध व स्पष्ट उच्चारित न कर पाना मेरे द्वारा शुद्ध वाचन पर बल नहीं देना	1. कक्षा में मेरे द्वारा हिन्दी पाठ्यपुस्तक में बच्चों द्वारा पाठ अध्ययन के दौरान पाया बच्चे अधिकाश शब्दों का गलत उच्चारण करते नजर आये जैसे – अध्ययन को अधयन, विद्यालय को विधालय उच्चारित कर रहे थे।	मेरे द्वारा अवलोकन
	2. विद्यालय के सहपाठी अध्यापकों से इन अशुद्धियों के बारे में पता किया तो उन्होंने भी अपने विषयों में बच्चों द्वारा की जाने वाली इस प्रकार उच्चारण संबंधी अशुद्धियों की जानकारी दी गई।	अन्य विषय के शिक्षकों से वार्तालाप
	3. बच्चों से कविता वाचन के दौरान भी वर्तनी अशुद्धियां बोलने में पायी गई 'बनाएं को बनायें', 'स्वर्ग को सवरग'	पाठयपुस्तक
	4. आपस में समूह ग्रुप चर्चा के दौरान गलत उच्चारण दोष विकार देखने को मिले। बो आगयो, के बेरो। स्थानीय भाषा का प्रभाव दिखाई दिया। अधिकांश बच्चे कक्षा में हिन्दी भाषा का प्रयोग नहीं के बराबर कर रहे थे। आपसी वार्तालाप में स्थानीय भाषा का इस्तेमाल ज्यादा था।	आपसी वार्तालाप
शुद्ध लेखन संबंधी समस्या	1. बच्चों के गृहकार्य/कॉपी जांच के दौरान निम्न अशुद्धियां देखने को मिली। लगभग	कॉपी जांच

	सभी बच्चों में एक जैसी अशुद्धियां देखने को मिली। जैसे – पानी को पाणी, रामायण को रामायन, निरोग को नीरोग आदि।	
	2. मेरे द्वारा श्यामपट्ट पर कठिन शब्दों को लिखकर बच्चों से देखकर लिखवाए। जांच की तो पता चला अधिकांश बच्चों ने देखकर भी कॉपी में गलत उतारे। बिल्ली को बिली, भालू को भालु, सीखना को सिखना आदि।	श्यामपट्ट
गृहकार्य जांच में अनियमितता	3. बोलकर पैराग्राफ लिखवाया उसमें भी छोटी–बड़ी मात्राओं की अनेक अशुद्धियां पायी गई। उदाहरण– कहानियां को कहानीयां, स्त्रियां, रोटीयां आदि।	अभ्यास पुस्तिका
	4. मेरे विद्यालय पर 10 वाक्य लिखवाये गये। जांच की तो पता चला अधिकांश बच्चों ने छोटी–बड़ी मात्राओं की खूब अशुद्धियां की है। विद्यालय को वीधालय, प्रधानाध्यापक को परधानाधापक जैसी अशुद्धियां पायी गयी।	कॉपी जांच

7. क्रियात्मक परिकल्पना का परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
भाषा संबंधी उच्चारण अशुद्धियों को दूर करना। हिन्दी भाषा में अक्षरों व मात्राओं की पहचान	1 वर्ण से शब्द बनाने व शब्द से वर्ण पहचान। क+ल कल प+र पर न+र नर	वर्णमाला चार्ट कक्षा में चिपकाना	5 दिन
समान ध्वनि शब्दों की पहचान करवाना।	2. गत्ते के कार्डो पर अलग अलग अक्षर लिखकर कक्षा में मेज पर डिब्बें के अन्दर बंद कर देना। बच्चों से एक एक अक्षर निकलवाना। फिर अक्षरों को मिलाकर नये शब्दों का निर्माण करना। जैसे – चल,पल,हल,गन आदि।	रंगीन फलेश कार्ड	3 दिन
शुद्ध उच्चारण पर बल देना। आवाज को जोड़ने वाली (गतिविधि)	3. बाल गीतों का अभ्यास दो तीन बाल गीत लिखकर कक्षा के अन्दर दीवार पर चिपकाये। सस्वर आरोह–अवरोह के साथ बालकर अभ्यास करवाया। साथ बोलकर अभ्यास करवाया। उनके मुख्य शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर अभ्यास करवाया गया। तालियों के माध्यम से एक अक्षर की एक ताली श्यामपट्ट पर	चार्ट रंगीन गत्ते	2 दिन

	एक–एक बच्चे के नाम लिखना। जितने अक्षर उतनी ताली बजाना। बच्चों के नाम के अक्षर की ताली बजाना और उनको लिखकर शुद्ध बोलना व पढ़ने का अभ्यास करवाना। जैसे– आलिया, राधा, रोहिताश		
चित्रों के माध्यम से शुद्ध लेखन अभ्यास	चित्रपट्ट के माध्यम से शुरू पहले अक्षर पर घेरा लगवाना।	जानवरों के चित्र कार्ड	2 दिन
शुद्ध लेखन क्षमता का विकास करना।	गांव में घटित कोई खास घटना के बारे में बच्चों से चर्चा करना। बच्चों द्वारा बताई गई घटना का एक–एक वाक्य श्यामपट्ट पर लिखना। रोजाना 5 वाक्य सरल भाषा में श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से लिखवाना।	वार्तालाप	5 दिन
मात्राओं की पहचान	समान ध्वनि शब्दों को पहचान कर उनका मिलान करना। अभ्यास करवाया। चित्रपट्ट द्वारा कहानी बच्चों के सामने प्रस्तुत करना। क्या हो रहा है? कौन क्या कर रहा है? संबंधी वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखकर अभ्यास करवाया गया। शुद्ध व अशुद्ध शब्दों की सूची बनाकर कक्षा के अन्दर दीवार पर चिपकाना शुद्ध शब्द अशुद्ध शब्द पानी पाणी नारी नारि प्राण प्रान पुष्टि पुष्टी परीक्षा परिक्षा शब्दजाल से शब्दों को ढूंढकर लिखना। ग्रुप समूह बनाकर बच्चों से शब्द पहचान कर शब्द लिखने दिये। ग्रुप समूह में लगभग बच्चों ने सही शब्द पहचान कर शुद्ध शब्दों का प्रयोग किया।	अभ्यास पुस्तिका चार्ट श्यामपट्ट अभ्यास पुस्तिका	3 दिन 3 दिन 3 दिन

8. दत संकलन :–

क्रियात्मक अनुसंधान में उपचारात्मक शिक्षण से पूर्व की स्थिति के आधार पर–

तालिका न. 1

अंकानुसार	वर्गीकरण	छात्र	छात्रा	योग
7–10	मेधावी	3	5	8

4–6	औसत	7	8	15
0–3	कमजोर	8	9	17
		18	22	40

तालिका न. 2

क्रियात्मक अनुसंधान में उपचारात्मक शिक्षण के पश्चात की स्थिति के आधार पर–

अंकानुसार	वर्गीकरण	छात्र	छात्रा	योग
7–10	मेधावी	9	10	19
4–6	औसत	8	10	18
0–3	कमजोर	1	2	3
		18	22	40

तालिका न. 1 व 2 से प्राप्त दतों की संख्यां के आधार पर मेधावी छात्र संख्यां तालिका न. 1 में छात्र संख्या 3 व छात्रा संख्यां 8 थी जो पश्च में बढ़कर छात्र संख्यां 9 व छात्रा 10 हो गई। इसी प्रकार तालिका न. 1 में औसत श्रेणी की छात्र संख्यां 7 व छात्रा संख्यां 8 थी जो बाद में बढ़कर छात्र सं. 8 व छात्रा संख्यां 10 हो गई। इसी प्रकार जो कमजोर वर्ग में छात्र संख्यां व छात्रा संख्यां 9 थी जो पश्च में मात्र छात्र संख्या 1 व छात्रा 2 रही।

उक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की पठन क्षमता पूर्व की अपेक्षा पश्च में बढ़ी है। जो यह स्पष्ट करती कि उपचारात्मक निराकरण के पश्चात बच्चों में पठन क्षमता व शुद्ध लेखन क्षमता निश्चित रूप से बढ़ी है अतः कार्ययोजना प्रभावी है।

9. विष्लेषण :–

उपचारात्मक निराकरण से पूर्व जो छात्र/छात्रा औसत श्रेणी के थे वे ज्ञान अभिवृद्धि से मेधावी श्रेणी में पहुंच गये। दृश्य–श्रव्य प्रतीकों के माध्यम से बच्चों में शुद्ध पठन व शुद्ध लेखन क्षमता का विकास किया गया। हिन्दी भाषा में अक्षरों व मात्राओं की सही पहचान व शुद्ध उच्चारण शुद्ध लेखन का अभ्यास उपयुक्त टी.एल.एम. वर्णमाला चार्ट, फलैश कार्ड, समान ध्वनि शब्द, शब्दजाल चार्ट आदि के माध्यम से करवाया गया। धाराप्रवाह वाचन क्षमता विकसित की गई। बालगीतों, कहानियों का अभ्यास कर रूचि पैदा की गई। शब्दों की पुनरावृति का प्रतिदिन अभ्यास करवाया गया। चित्रपट्ट कहानी व घटनाओं के माध्यम से सोचने–समझने के कौशल को विकसित करने का प्रयास किया गया।

10. निष्कर्ष :–

हिन्दी भाषा में शब्दकोष में वृद्धि हुई। छात्र/छात्राओं में आत्मविश्वास बढ़ा। गुणवतापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा मिला। शिक्षण सरल व रूचिकर होने लगा। बच्चें आपसी वार्तालाप में शुद्ध हिन्दी भाषा का उपयोग करने लगे। बच्चों की नियमितता बढ़ी। बिना झिझक के समूह में कार्य करने से कला पक्ष मजबूत हुआ। गतिविधि आधारित शिक्षण से बच्चों में शुद्ध बोलना व शुद्ध लिखना क्षमता का विकास हुआ। प्रत्येक बच्चे की कठिनाई को दूर करने का अवसर प्राप्त हुआ। समय की बचत हुई।

11. सुझाव :–

भाषा शिक्षण में दुष्प्रभाव से बचने के लिए उपचारात्मक शिक्षण आवश्यक है। सभी विषयाध्यापक अपने विषयों में भी इस गतिविधि के अनुसार कार्ययोजना बनाकर शिक्षण कार्य करवायें तो निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। शिक्षण रूचिकर होगा। बच्चों में सामान्य की बजाय जल्दी सीखने की क्षमता बढेगी। जो छात्र कमजोर श्रेणी के उनको विशेष लाभ होगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

कियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों द्वारा शब्द भण्डार व वाक्य निर्माण क्षमता प्रोन्नति का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्री विकाश कुमार, अध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अणखोल्यां, सुजानगढ़, चूरू

शीर्षक :–

''विद्यार्थियों द्वारा शब्द भण्डार व वाक्य निर्माण क्षमता प्रोन्नति का प्रयास''।

शोध की पृष्ठभूमिः–

यह सर्वविदित तथ्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका व्यक्तित्व, उसका चिंतन और उसका व्यवहार सब कुछ समाज के सापेक्ष होता है। दूसरी तरफ समाज का विकास भी मनुष्यों द्वारा स्थापित मानव मूल्यों के बीच से ही होता है। समाज और मनुष्य दोनों को जोड़ने का काम भाषा करती है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने समाज और संस्कृति से जुड़ता है। अपने विचारों को सही ढंग से प्रस्तुत करने के लिए भाषा का शुद्ध व स्वष्ट उच्चारण व लेखन अति आवश्यक है। यदि भाषा शुद्ध व स्पष्ट न हो तो शब्दों व वाक्यों का अर्थ ही परिवर्तित हो जाता है। इसलिए भाषा में शब्दों व वाक्यों का शुद्ध व स्पष्ट होना अति आवश्यक है। भाषा, मनुष्य और समाज का अस्तित्व क्रमशः एक दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर है।

समस्या चयन का उद्देश्य :–

बच्चों की शब्द भण्डार व वाक्य निर्माण की भाषायी शैक्षिक समस्या के निम्नलिखित आधारभूत उद्देश्य लक्षित किए गए है–

1. विद्यार्थियों में शब्द भण्डार में वृद्धि करना।

2. विद्यार्थियों में वाक्य निर्माण क्षमता में वृद्धि का प्रयास करना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

विद्यार्थियों में भाषागत अशुद्धियों में सुधार करने हेतु निम्न क्रियात्मक परिकल्पनाएं परिलक्षित की गयी–

1. प्रयास द्वारा विद्यार्थियों में शब्द भण्डार में वृद्धि हो सकेगी।

2. प्रयास द्वारा विद्यार्थियों में वाक्य निर्माण क्षमता में प्रोन्नति हो सकेगी।

समस्या का क्षेत्र :– शैक्षिक ।

समस्या का सीमांकन :–

यह क्रियात्मक अनुसंधान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अणखोल्यां, सुजानगढ़ की कक्षा 5 के विद्यार्थियों में भाषागत अशुद्धियों में शैक्षिक गुणवता लाने के प्रयास हेतु सीमित है।

समस्या के संभावित कारण एवं साक्ष्य :–

1. लिखित कार्य को लापरवाही से करना।	गृहकार्य उतरपुस्तिका का अवलोकन
2. मात्राओं का उच्चारण सही न कर पाना।	वार्तालाप
3. विषयाध्यापकों द्वारा अभ्यास पुस्तिका को बारीकी से नहीं जांचना।	गृहकार्य उतरपुस्तिका

परिकल्पना परीक्षण हेतु कार्ययोजनाः–

क्र.स.	अपेक्षित क्रियाएं	कार्य जो करना है	साधन/उपकरण	समयावधि
1.	वर्तनी संबंधी त्रुटियों का संकलन	विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में की जाने वाली वर्तनी संबंधी त्रुटियों का संकलन।	गृहकार्य एवं मूल्यांकन उतरपुस्तिकाओं से संकलन करना।	1 दिन
2.	वर्तनी संबंधी त्रुटियों का वर्गीकरण	मात्रा संबंधी त्रुटियां व्यंजन संबंधी त्रुटियां संयुक्ताक्षर संबंधी त्रुटियां र व ऋ संबंधी त्रुटियां श,ष,स संबंधी त्रुटियां अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग संबंधी त्रुटियां।	वर्गीकरण चार्ट	1 दिन
3.	पूर्व परीक्षण	हिन्दी के विषयाध्यापक द्वारा सभी प्रकार की त्रुटियों का विविध विधाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का पूर्व परीक्षण पत्र बनाकर विद्यार्थियों पर प्रशासित किया जाना।	पूर्व परीक्षण पत्र, कक्षा 5 के विद्यार्थी	1 दिन
4.	पूर्व परीक्षण की उ.पु. की जांच एवं अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों का	विषयाध्यापक द्वारा पूर्व परीक्षण जांच कर अंक सूची तैयार करना, अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली अशुद्धियों	पूर्व परीक्षण अंक सूची	1 दिन

	चयन	को सुचीबद्ध करना।		
5.	क्रियान्वयन	विषयाध्यापक द्वारा वर्तनी संबंधी त्रुटियों के सुधार हेतु संव्यूह संरचना तैयार करना। मुखाकृति से उच्चारण स्थल आदि से अवगत करवाकर शब्दों की पहचान करवाना। चयनित शब्दों का श्रुतिलेख लिखवाना और अशुद्ध वर्तनी का अनुवर्तन कार्य करवाया जाना। सर्वाधिक शुद्ध वर्तनी लिखने वाले विद्यार्थियों की प्रशंसा कर प्रोत्साहित करना। विद्यार्थियों के गृहकार्य की उ.पु. की बारीकी से जांच करना एवं अनुवर्तन कार्य हेतु आवश्यक निर्देश देना।	विद्यार्थी विषयाध्यापक अभ्यास पुस्तिका मुखाकृति	2 दिन
6.	पश्च परीक्षण	पूर्व परीक्षण एवं चयनित वर्तनी संबंधित त्रुटियों के आधार पर पश्च परीक्षण पत्र बनाना एवं विद्यार्थियों पर प्रशासित करना। विषयाध्यापक द्वारा पश्च परीक्षण पत्र का अंकन कार्य करना। पूर्व व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलनात्मक सारणी तैयार करना और उपलब्धि ज्ञात करना।	प्राप्तांको की तुलनात्मक सारणी बनाना।	1 दिन

दत संकलन :–

मेरे द्वारा शोध के दत संकलन में निम्नलिखित बिन्दुओं का अनुसरण किया जायेगा।

1. शिक्षक द्वारा वर्ण चार्ट व श्रुतिलेखन का उचित उपयोग।

2. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ किए गए व्यवहार का विद्यार्थियों पर प्रभाव।

3. शिक्षक के सकारात्मक व्यवहार का बच्चों पर प्रभाव का स्तर जानना।

न्यादर्श :–

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अणखोल्यां, सुजानगढ़ की कक्षा 5 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण :–

विद्यालय में विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से दत संकलन का कार्य किया गया है।

1. अवलोकन – 12 फरवरी 2022

2. पूर्व परख – 14 फरवरी 2022

3. पश्च परख – 19 फरवरी 2022

सारणीयन :–

पूर्व परीक्षण पर स्थिति –

वर्गीकरण	अंकानुसार 20 अंक	विद्यार्थियों की संख्यां	प्रतिशतता
कमजोर	1–7	8	40
औसत	8–14	9	45
मेधावी	15–21	3	15

पश्च परख के पश्चात विद्यार्थियों की स्थिति –

वर्गीकरण	अंकानुसार 20 अंक	विद्यार्थियों की संख्यां	प्रतिशतता
कमजोर	1–7	6	30
औसत	8–14	10	50
मेधावी	15–21	4	20

पूर्व परख माध्यिका = N/2 वां पद

20/2 वां पद संचयी आवृति में 8–13 वाला वर्ग है।

पश्च परख माध्यिका = N/2 वां पद

20/2 वां पद संचयी आवृति में 14–21 वाला वर्ग है।

पूर्व परख माध्यक = 9.55

पश्च परख माध्यक = 11.81

दत विश्लेषण :–

क्रियात्मक अनुसंधान दत संकलन से एकत्रित आकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि भाषा में शुद्ध उच्चारण व लेखन से भाषा की शुद्धता में सुधार हुआ है। ऐसा मुझे विद्यार्थियों के पूर्व परख और पश्च परख के अन्तराल से ज्ञात हुआ है।

निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान कार्य द्वारा भाषा में शुद्ध पठन व लेखन की गुणवता का प्रयास सफल रहा। ऐसा सभी विद्यालयों में किया जाए तो गुणवता में सुधार अवश्य होगा।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''गतिविधि आधारित शिक्षण से प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण स्तर उन्नयन करने का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती रचना, अ., राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, खण्डवा पट्टा पीथीसर, चूरू।

शीर्षक :–

''गतिविधि आधारित शिक्षण से प्राथमिक कक्षाओं में भाषा स्तर उन्नयन करने का प्रयास।''

प्रस्तावना :–

बालक के सर्वागीण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यार्थी की शिक्षा का स्तर बालक की आयु व कक्षा स्तर के अनुरूप होना चाहिए स्पष्ट व कुछ उच्चारण के अभाव में लिखित अभिव्यक्ति अपूर्ण है। गतिविधि आधारित शिक्षण जैसा कि नाम से ज्ञात होता है कि इसमें शिक्षार्थी सक्रिय रूप से अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर ज्ञान के निर्माण और पुनः निर्माण में शामिल है इसे करके सीखने के रूप मे जाना जाता है।

गतिविधि आधारित शिक्षण में छात्र व अध्यापक दोनो मिलकर गतिविधि करते है इससे क्रियात्मक व सक्रियता , सजगता, सरसता का वातावरण बनाकर भाषा शिक्षण को बोंझिल नहीं बनता है। रोचक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक बड़ी ही सरलता से बच्चों को भाषा विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक या सहयोगात्मक विकास एवं सृजनात्मक विकास के अवसर मुहैया करा सकते है। कभी–कभी कुछ बच्चों में अंग्रेजी भाषा का डर उत्पन्न हो जाता है। उसे भी खेल या गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया से दूर किया जा सकता हैं।

शोध की आवश्यकता व महत्व :–

प्रारम्भिक शिक्षा में गुणवता परक शिक्षा वर्तमान समय में बड़ी चुनौती के रूप में है डाइट का हर संभव बच्प्रयास होता है कि कैसे शैक्षिक समस्याओं का निदान हो इस प्रयास में समय–समय पर डाइट द्वारा स्वयं भी शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य किया जाता है। और शिक्षकों का शैक्षिक समस्याओं के निदान हेतु मार्गदर्शन किया गया शोधकर्ता ने भी अपने विद्यालय रा.उ.प्रा.वि., खण्डवा के कक्षा 3–4 के बच्चों के लेखन कार्य में स्पेलिंग की त्रुटियों के निदान हेतु क्रियात्मक अनुसंधान शोध किया। इस शोध को करने में शोधार्थी ने बच्चों साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों द्वारा अंग्रेंजी भाषा की ध्वनि पहचान की समझ का विकास उचित उपकरणों का चयन और उनका सही प्रयोग हेतु उचित गतिविधियों का चयन कर कार्य किया गया। इस शोध से बच्चों में अंग्रेजी भाषा की त्रुटियों के सुधार में सकारात्मक वृद्धि हुई। शोधकर्ता ने अनुभव किया की बच्चों के भाषा विकास हेतु इस तरह शोध कार्य किये जाने चाहिए। इस प्रयास से बच्चों में अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न होगी व बच्चों में शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण कर पाने में सक्षम होगे।

शोध के उद्देश्य :–

1. गतिविधि आधारित शिक्षण से भाषा के बुनियादी कौशल सीख सकेंगे।

2. शिक्षार्थी भाषा संबंधित दक्षताओं को सरलता प्राप्त कर सकेंगे उनके सीखने का स्तर संतोष हो सकेगा।

3. बाल केन्द्रित शिक्षण सिद्धान्त सतत एवं व्यापक मूल्यांकन तथा गतिविधि आधारित अधिगम से भाषा का स्तर उंचा उठ सकेंगा।

4. खेल–खेल में भाषा ज्ञान सीख सकेंगे।

5. गतिविधियों शारीरिक भागीदारी बच्चें के आनन्द और सक्रियता को बढ़ावा मिल सकेगा।

6. बच्चों की मानसिक गतिविधियों तथा तार्किक चिंतन आपसी विचार–विमर्श अपने आप काम करना आदि ज्ञान का बोध स्थाई रह सकेगा।

7. अंग्रेजी भाषा में सरल वाक्यों की पहचान कर सकेंगे और चित्र बना सकेंगे।

8. बच्चों में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करेगा।

शोध की परिकल्पनाः–

बच्चे खेल–खेल में अंग्रेजी भाषा के स्पेलिंग का अनुप्रयोग प्रभावी ढ़ग से कर सकेंगे। स्पेलिंग को मिट्टी में लिखवाना फलैश कार्ड दिखाकर। गतिविधि आधारित क्रिया से कुछ सरल स्पेलिंग को सीखाना व याद करवाना। रंगों के प्रयोग से करते हुए स्पेलिंग को आकर्षित बनाना। गतिविधि आधारित शिक्षण से भाषा पढ़ने लिखने में सरलता होगी तथा भाषा शिक्षण रूचिकर लगेगा।

समस्या कथन :–

रा.उ.प्रा.वि., खण्डवा में कक्षा 2 के विद्यार्थियों को गतिविधि आधारित शिक्षण से भाषा का उन्नयन।

समस्या	समस्या के कारण	समस्या के प्रभाव
कक्षा में सरल स्पेलिंग व सरल शब्दों का अंग्रेजी में स्पष्ट उच्चारण न हो पाना। स्पेलिंग स्पष्ट न लिख पाना।	उच्चारण स्पष्ट न होना अंग्रेजी में स्पेलिंग स्पष्ट न लिख पाना	उच्चारण व सरल स्पेलिंग को नही जान पा रहे है अंग्रेजी विषय में रूचि नही बना पा रहे है।

सीमांकन :–

यह क्रियात्मक शोध चूरू के रा.उ.प्रा.वि., खण्डवा पट्टा पीथीसर के कक्षा 2 के बच्चों को अंग्रेजी भाषा में रोचकता बढ़ाने व भाषा को सरल शब्दों को सीखने के अनुप्रयोग की समस्या को लेकर किया गया। यह क्रियात्मक शोध प्राथमिक कक्षाओं में गतिविधियों द्वारा भाषा के विकास के लिए यह शोध किया गया।

क्षेत्र :– शैक्षिक।

न्यादर्श :–

इस क्रियात्मक शोध का न्यादर्श चूरू जिले के रा.उ.प्रा.वि., खण्डवा पट्टा पीथीसर के कक्षा 2 के बच्चे लिये गए है।

उपकरण :–

इस क्रियात्मक शोध के लिए उपकरण अध्यापिका द्वारा स्वनिर्मित उपकरण प्रयुक्त किये गये बच्चों द्वारा चित्रकारी करी गयी व चित्रों को आकर्षित करने हेतु रंगों का प्रयोग किया गया। बच्चों द्वारा अंग्रेंजी वर्णमाला के कार्ड निर्मित किये गये। बच्चों को वर्तनी सुधार हेतु एबीएल. किट का प्रयोग किया गया बच्चों ने गोल घेरे की गतिविधि में एलफाबेट बोले व अनुकरण किया।

1 व्यवहारिक व सरल शब्दों की अंग्रेजी में स्पेलिंग की सूची बनाना।

2 चित्र दिखाकर उच्चारण व स्पेलिंग की समझ का परीक्षण पत्र पूर्व परीक्षण।

3 चित्र दिखाकर उच्चारण व स्पेलिंग की समझ का परिक्षण पत्र–पश्च परीक्षण।

1 बच्चों के अंग्रेजी विषय में उच्चारण व स्पेलिंग लिखने का कौशल का अवलोकन परिक्षण पत्र

2 सरल शब्दों की स्पेलिंग लिखना व चित्र की समझ का परीक्षण पत्र। सरल वाक्यों की पहचान व समझ का परिक्षण पत्र।

छात्र–शिक्षक का साक्षात्कार प्रपत्र चित्रों से सम्बधित गतिविधियों के बारे में जानकारी देना व किस प्रकार कठीनाई आती है यह पूछना।

शिक्षक द्वारा अंग्रेजी में माई सेल्फ के आधार पर पूछना–पूर्व प्रपत्र, पश्च प्रपत्र।

क्रियात्मक शोध हेतु उपकरण का निर्माण किया गया।

व बच्चों के साथ कार्य कर आवश्यक सुधार किया गया।

क्रियात्मक शोध कार्ययोजना का विकास एवम् क्रियान्वयन।

रा.उ.प्रा.विद्यालय खण्ड्वा पट्टा पीथीसर में कक्षा–2 के बच्चों की अंग्रेजी भाषा में रूचि नही होने के कारण बच्चे अपनी कक्षा स्तर की विभिन्न आवश्यकताओं में से अंग्रेजी के सरल शब्दों को समझने में बच्चे कुशल नहीं थे शोधकर्ता द्वारा समस्या की पहचान कर समस्या का समाधान एक क्रियात्मक शोध के माध्यम से करने का निर्णय किया गया। शोधकर्ता अध्यापिका के द्वारा रा.उ.प्रा.वि. खण्डवा कक्षा–3 के बच्चों में अंग्रेजी विषय को रूचिकर बनाने हेतु अंग्रेजी के सरल शब्दों की समस्या को चिन्हित करते हुऐ।

क्रियात्मक शोध हेतु निम्नवत कार्ययोजना का निर्माण किया गया।

कार्य योजनाः–

क्र. सं.	कार्य योजना	समय
1	सरल व व्यवहारिक शब्दों की अंग्रेजी में स्पेलिंग की सूची बनाना	1 दिन
2	चित्र बनाना टी एल एम तैयार करना	2 दिन
3	गतिविधियों का आयोजन कर परिक्षण प्रपत्र के आधार पर बच्चों की सम्प्राप्ति का पूर्ण व उसका विश्लेषण	3 दिन
4	चित्रों की समझ को विकसित करने हेतु बच्चों के साथ गतिविधि आधारित बातचित	4 दिन
5	छात्रों का परीक्षण प्रपत्र के आधार पर चित्रों से सम्बन्धित सरल शब्दों की गतिविधियों का आयोजन कर छात्रों की सम्प्राप्ति का पश्च परिक्षण एवमं उसका विश्लेषण	5 दिन

1 पूर्व परीक्षण अर्न्तगत आयोजित गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के भाषा सुधार व अशुद्धियों की समझ का आकलन किया गया।

पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आयोजित गतिविधियां।

1 बातचीत आधारित गतिविधिः–

पूर्व में बच्चे कोई भी गतिविधि नही कर पा रहे थे।

पश्च अध्यापिका द्वारा कुछ शब्द के साथ क्रिया करके सिखाया गया। जैसे come, go, sit down, good after noon , may i come in

बातचीत आधारित गतिविधि में अंग्रेजी प्रश्नों के माध्यम से बच्चों की क्रिया जानने का प्रयास किया गया।

question -What's your name?

question- How are you?

question- Where do you live?

गतिविधि :– सरल व छोटी spelling के चित्र द्वारा दिखाकर मिट्टी पर लिखने की कोशिश की जाती है और बच्चों द्वारा उन spelling को repeat करवाया जाता है

खेल विधि द्वारा :– सभी बच्चें स्व निर्मित फलैश कार्ड बनाएगें व रंगों का प्रयोग करेगें व बच्चों के नाम अंग्रेजी में लिखकर सरल स्पेलिंग की पहचान करते है

गतिविधि का आधार :– अध्यापिका द्वारा उक्त गतिविधियां बच्चों के अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि व अंग्रेजी का वातावरण बने इसलिए कराई जाती है गतिविधियों में सभी बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

उक्त गतिविधियां करवाने का मुख्य कारण कक्षा 1 के बच्चों का वर्णो की स्पष्ट पहचान हो सकने का विशेष ध्येय है अभी कक्षा 3 के कुछ ही बच्चों का प्रयोग किया गया हैं। अध्यापिका ने पाया की इस विधि से चित्रों को दिखा व स्पेलिंग दिखा बच्चें सहज रूप से पढ़ते व उच्चारण करते है व स्पेलिंग लर्न

कर वर्ण की समझ लेते है। बच्चें अपना कार्य करने में पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते है। वह स्वयं ही एक दूसरे का कार्य देखकर अपने कार्य में सुधार की अपेक्षा रखते है। शोधकर्ता अध्यापिका द्वारा पश्च परिणाम उत्साह जनक पाये गए।

दत संकलन :–

कक्षा 2 बच्चों को चित्र दिखाकर चित्र के उच्चारण व स्पेलिंग की समझ।

क्र.स.	नाम	चित्रों का उच्चारण अंग्रेजी में करना	चित्रों की स्पेलिंग पहचान करना	गतिविधियां
1.	दिव्या	C	P	चित्रों को दिखाकर बच्चों से उच्चारण करने को कहा गया व स्पेलिंग पढ़ने को कहा गया बच्चें स्पेलिंग व उच्चारण करने में स्पष्ट नही है।
2.	योगिता	C	P	
3.	अनु	P	P	
4.	रीतिका	W	W	
5.	निखिल	W	W	
6.	शिवानी	W	W	
7.	एकता	W	W	
8.	कान्ता	W	W	

विश्लेषण :–

बच्चों को आस–पास की वस्तुओं व अंग्रेजी भाषा की कोई जानकारी नही हैं। पी वाले बच्चों के लिए पुनरावृति करवाई गयी व सुधार कार्य करवाया गया जब तक की वह अपनी सम्प्राप्ति के स्तर तक न आ जाए।

परीक्षण प्रपत्र 2

कक्षा 3 बच्चों द्वारा अंग्रेजी में चित्रों के उच्चारण हेतु कौशल प्रेषण (पूर्व परीक्षण)

क्र. स.	नाम	अंग्रेजी में चित्रों को पहचान	चित्रों व वाक्यों की स्पेलिंग पढना,बोलना, लिखना	मिट्टी या पेपर पर लिखना	विश्लेषण
1.	दिव्या	W	P	C	वाक्यों को पढ़ने की जानकारी नहीं है चित्रों को देखकर वाक्य भी नहीं बोल पाते हैं।
2.	योगिता	W	P	C	
3.	अनु	W	P	P	
4.	रीतिका	W	P	C	
5.	निखिल	W	P	P	
6.	शिवानी	W	P	P	
7.	एकता	W	P	P	
8.	कान्ता	W	P	P	

पी वाले छात्र–छात्रा लगातार कक्षा–कक्ष में उपस्थित नही हो पा रहे है इस प्रकार अपना कार्य पूर्ण करने में ओर अधिक समय लगेगा। पुनरावृति कार्य चलता रहेगा जब तक समप्राप्ति के स्तर तक न आ जाए।

परीक्षण प्रपत्र 2 (पश्च परीक्षण) कक्षा 3

क्र. स.	नाम	चित्रों व वाक्यों की स्पेलिंग पढना,बोलना, लिखना	चित्रों व वाक्यों की स्पेलिंग पढना, लिखना	मिट्टी या पेपर पर लिखना	विश्लेषण
1.	दिव्या	C	C	C	वाक्यों को पढ़ने की जानकारी नहीं है चित्रों को देखकर वाक्य भी नहीं बोल पाते हैं।
2.	योगिता	C	C	C	
3.	अनु	C	C	C	
4.	रीतिका	C	C	C	
5.	निखिल	C	C	C	
6.	शिवानी	C	C	C	
7.	एकता	C	P	C	
8.	कान्ता	P	P	C	

निष्कर्ष :–

अध्यापिका द्वारा किया गया शोध के क्रियान्वयन से यह बात अनुभव की गयी की बच्चों की अंग्रेजी विषय के प्रति डर व हिचक को दुर करने का प्रयास बहुत कम कालांश में ही हो पा रहा था। जिसकी सम्प्राप्ति संतोषजनक नहीं थी अध्यापिका द्वारा अपने क्रियात्मक शोध में अंग्रेजी विषय में जिन बच्चों को वर्ण लिखना व पढ़ना भी नहीं आता था उनकी पढ़ने व लिखने की समझ को विकसित करने हेतु सीधे चित्रों के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षण दिया गया। चित्रों का अवलोकन बच्चों द्वारा करवाया गया व वर्णो की पहचान कर लिखवाया गया इस प्रकार स्वयं करके सीखने से बच्चों की समझ में उत्साहजनक वृद्धि हुई।

सुझाव :–

गतिविधियों के माध्यम से बच्चे सीखे गए ज्ञान का अपने व्यवहारिक जीवन में शब्दों का प्रयोग करने में सक्षम हो पाते है। शोधकर्ता ने यह महसुस किया कि बच्चों की शुरूआत रूप में वर्णमाला ही सीखाते है फिर स्पेलिंग की ओर लेकर जाते हैं। पर शोधकर्ता ने यह महसुस किया कि बच्चों को हम सीधे सरल चित्रों को दिखाकर उनका उच्चारण व उनकी ही स्पेलिंग लिखने को दी जा सकती है। बच्चे मिट्टी में या पेपर में आसानी से लिखने का प्रयास करते हैं। वर्ण सीखने से पहले बच्चे को चित्र का उच्चारण, चित्र की बनावट, चित्र की स्पेलिंग लर्न हो जाती है व सरल बोलने लिखने की समझ विकसित करता है। बच्चों से यह काम करवाया जा सकता है।

अनुसंधान का शीर्षक

''कक्षा 8 के विद्यार्थियों मं अंग्रेजी भाषा वाचन व लेखन क्षमता बढ़ाने का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्रीमती कुसुम रानी, व.अ., राजकीय माध्यमिक विद्यालय, खुडेरा बड़ा, रतनगढ़, चूरू

शीर्षक :–

'' कक्षा 8 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा वाचन व लेखन क्षमता बढ़ाने का प्रयास।''

पृष्ठभूमि :–

वर्तमान समय में भारत में भी अंग्रेजी भाषा को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है, जो व्यक्ति अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप करता है समाज उससे बहुत प्रभावित होता है। तथा उसे सम्मान से देखा जाता है। इस कारण अभिभावक भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में ज्यादा भेजने लगे हैं। इसके लिए सरकार भी अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलकर सराहनीय कार्य कर रही है लेकिन यह हर गांव तक संभव नही हो पाया है और भारत की अधिकांश आबादी गांव में रहती है। शोधकर्ता द्वारा विद्यालय अनुसंधान

के दौरान देखने में आया कि क्षेत्रीय बोली प्रभाव के कारण प्राथमिक स्तर के छात्र तो क्या उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र भी अंग्रेजी शब्दों का उच्चारण सही नहीं कर पाते हैं। अतः छात्रों के अंग्रेजी शब्दों के लेखन व वाचन कौशल में वृद्धि करने हेतु शोधकर्ता द्वारा यह क्रियात्मक अनुसंधान किया गया है।

शोध का औचित्य एवं महत्व :–

1. विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के शुद्ध उच्चारण व लेखन की समस्या का पता लगाया जा सके।

2. अंग्रेजी भाषा की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक के कठिनाई स्तर का पता लगाया जा सके।

3. कक्षा 8 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के प्रति अरूचि का पता लगाया जा सके।

सीमांकन :–

यह अनुसंधान रा.मा.विद्यालय, खुडेरा बड़ा के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित है।

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों के शुद्ध वाचन की योग्यता विकसित करना।

2. छात्रों में अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न करने का प्रयास करना।

3. विद्यार्थियों में अंग्रेजी शब्दों व छोटे–छोटे वाक्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करने की क्षमत विकसित करना।

समस्या के संभावित कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य	अध्ययन अनुमान
1.	अंग्रेजी बोलचाल की भाषा न होने के कारण विद्यालय के अतिरिक्त अन्य स्थान पर माहौल न मिलना।	साक्षात्कार	तथ्य
2.	छात्रों द्वारा अंग्रेजी भाषा के उच्चारण व लेखन का अभ्यास नहीं करना।	अवलोकन द्वारा	तथ्य
3.	अध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य में परम्परागत विधियों का प्रयोग करना।	अवलोकन द्वारा	तथ्य

न्यादर्श :– रा.मा.विद्यालय, खुडेरा बड़ा की कक्षा 8 के 15 विद्यार्थी।

क्षेत्र :– शैक्षणिक।

उपकरण :– साक्षात्कार, टीएलएम, कार्यपुस्तिकाएं।

क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

1. शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण में टी एल एम का प्रयोग करते हूए सरल विधि से छात्रों में रूचि पैदा कर सकता है।

2 छात्रों से साप्ताहिक अन्त्याक्षरी के माध्यम से शुद्ध उच्चारण हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

3 अध्यापक द्वारा अंग्रेजी शब्दों व छोटे–छोटे वाक्यों का प्रतिदिन , व्यवहारिक उपयोग द्वारा अंग्रेजी भाषा में छात्रों को पारंगत कर सकता है।

क्रियात्मक शोध कार्ययोजना का निर्माण एवं क्रियान्वयनः–

क्र. सं.	विवरण	कार्य विवरण	उपकरण	समयावधि
1	बच्चों को चिन्हित करना	अवलोकन द्वारा छात्रों का वर्गीकरण करना, गृहकार्य जांच, छात्रों के अशुद्ध उच्चारण का अवलोकन करना	कक्षा–कक्ष शिक्षण में चार्ट का प्रयोग,कार्यपुस्तिकाए	2 दिन
2	मिटिंग	स्टाफ मिटिंग में नवाचारों व नवीन शिक्षण विधियों पर चर्चा	सामुहिक चर्चा	1 दिन
3	शिक्षण	अन्त्याक्षरी द्वारा रूचि पैदा करना	अवलोकन	1 घण्टा
4	रूचि पैदा करना	अंग्रेजी शब्दों का दैनिक जीवन में उपयोग करना	वार्तालाप	प्रतिदिन 15–20 मिनट

गतिविधियांः–

1 सर्वप्रथम छात्रों को चिन्हित किया गया व समूह में बांट दिया गया।

2 अध्यापकों के साथ स्टाफ मीटिंग का आयोजन किया गया।

3 समूह में छात्रों को बांट कर अन्तयाक्षरी करवायी गई।

सांख्यिकीः–पूर्व परख–1

क्र. सं.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1	आजाद सिंह	20	1
2	अंकिता	20	15
3	आरती	20	6
4	बबिता	20	4
5	हर्षिता	20	18
6	कृष्णा	20	1
7	मोनिका सैन	20	2
8	मोनिका शर्मा	20	19
9	नन्दलाल	20	4
10	नरेन्द्र कुमार	20	3
11	रामनिवास	20	10
12	सिकेन्द्र	20	0
13	सुनिल	20	1
14	सुशिल कुमार	20	1
15	प्रियंका	20	5

पश्च परख –2

क्र.सं.	छात्र/छात्रा का नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1	आजाद सिंह	20	15
2	अंकिता	20	19
3	आरती	20	19
4	बबिता	20	17
5	हर्षिता	20	20
6	कृष्णा	20	16
7	मोनिका सैन	20	19
8	मोनिका शर्मा	20	13
9	नन्दलाल	20	18
10	नरेन्द्र कुमार	20	17
11	रामनिवास	20	19
12	सिकेन्द्र	20	10
13	सुनिल	20	14
14	सुशिल कुमार	20	11
15	प्रियंका	20	20

वर्ग अन्तराल पश्च परीक्षण के आधार पर

क्र.सं.	वर्ग अन्तराल प्राप्तांक	छात्रों की संख्या
1	0–2	0
2	3–4	0
3	5–6	0
4	7–8	0
5	9–10	1
6	11–12	1
7	13–14	2
8	15–16	2
9	17–18	3
10	19–20	6

दत विश्लेषणः–

वर्ग अन्तराल प्राप्तांक	बच्चों की संख्या पूर्व परीक्षण	प्रतिशत	बच्चों की संख्या पश्च परीक्षण	प्रतिशत
0–2	7	45	0	0
3–4	3	20	0	0
5–6	1	7	0	0
7–8	0	0	0	0
9–10	1	7	1	7
11–12	0	0	1	7
13–14	0	0	2	13
15–16	1	7	2	13
17–18	1	7	3	20
19–20	1	7	6	40

निष्कर्षः– क्रियात्मक अनुसंधान के पश्चात प्राप्त आंकडों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक छात्र की सीखने की क्षमता व तरीका दोनों अलग–अलग होते हैं यदि रूचिकर शिक्षण विधियां अपनाकर शिक्षण कार्य करवाया जाए तो छात्रों की सीखने की क्षमता को बढाया जा सकता है। टी एल एम अन्त्याक्षरी व छोटे–छोटे वाक्यों का आम बोलचाल में प्रयोग करके छात्रों की रूचि व वाचन क्षमता को बढा सकते है। जब क्रियात्मक अनुसंधान के दौरान इन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया गया तो आंकड़ों के अनुसार 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या पूर्व परीक्षण में जो 78 प्रतिशत भी पश्च परीक्षण में वह 7 प्रतिशत पर आ गई।

सुझावः– कक्षा–कक्ष शिक्षण के दौरान नवाचारों का प्रयोग करके छात्रों में रूचि पैदा की जा सकती है। साधारण बोलचाल के शब्द व छोटे–छोटे वाक्य छात्रों की अंग्रेजी भाषा में बोलने के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए। जो छात्र अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप करने का प्रयास करता है उसे छोटे–छोटे ईनाम देकर जैसे– चॉकलेट, टॉफी, पेंसिल आदि देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। ताकि उसे देखकर अन्य छात्र भी प्ररित हो सकें।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''उच्च प्राथमिक स्तर में कार्यपुस्तिकाओं के माध्यम से गुणवतापूर्ण शिक्षण करने का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्री जयप्रकाश, अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तेहनदेसर, बीदासर, चूरू

शीर्षक :– ''उच्च प्राथमिक स्तर में कार्यपुस्तिकाओं के माध्यम से गुणवतापूर्ण शिक्षण करने का प्रयास।''

शोध की प्रस्तावना :–

राज्य सरकार द्वारा शिक्षा में सुधार हेतु समय–समय पर विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है। छात्रों के सर्वागीण विकास के लिए वर्तमान परिस्थितियों में भी राज्य सरकार छात्रों के लर्निंग गैप को पूरा करने हेतु प्रयासरत है। वर्तमान कोविड–19 की परिस्थितियों ने हमें तकनीकी परिवर्तन और शिक्षण पद्धतियों में नवाचार के लिए तैयार किया है। राज्यों ने अपने–अपने स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार करने के प्रयास किये है। राजस्थान सरकार द्वारा भी शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल लर्निंग पर विभिन्न कार्यक्रमों को लागु किया है। जैसे –स्माईल प्रोग्रम, शिक्षादर्शन, शिक्षावाणी,

हवामहल, दीक्षा सामग्री, कला उत्सव, शालादर्पण के माध्यम से ई. कंटेंट आदि। इस पूरी प्रक्रिया में पंचायत स्तर के शिक्षा अधिकारी ने मजबूत कड़ी के रूप में राज्य के नीतिकारों व कार्यान्वयनकर्ताओं के बीच मुख्य भूमिका निभाई है।

शोध का औचित्य व महत्व :–

शिक्षण में गुणवतापूर्ण सुधार हेतु राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न प्रकार के नवाचार किये गये है। वर्तमान में राज्य सरकार ने कोरोना से उत्पन्न हुए अधिगम अंतराल को दुर करने हेतु नवाचार के तौर पर कार्यपुस्तिकाओं का वितरण प्रत्येक विद्यालय स्तर पर किया गया है। इन कार्यपुस्तिकाओं के माध्यम से छात्रों के अधिगम स्तर को गतिविधियों के माध्यम से कक्षा स्तर तक लाने का प्रयास किया गया है। लेकिन वर्तमान में इन कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग केवल औपचारिक रूप से किया जा रहा है। अतः इन कार्यपुस्तिका का व्यावहारिक रूप से किस प्रकार उपयोग किया जा सके व छात्रों में अधिकाधिक सीखने के प्रतिफलों का विकास कर सकें।

समस्या सीमांकन :–

रा.उ.मा.वि., तेहनदेसर में उच्च प्राथमिक कक्षाओं तक सीमित है।

क्षेत्र :– शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित।

शोध उद्देश्य :–

1. कार्यपुस्तिकाओं के द्वारा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से छात्रों की अध्ययन में रूचि पैदा करना।

2. अध्यापक द्वारा कार्यपुस्तिकाओं की गतिविधियों को व्यवहारिक रूप में करवाना।

समस्या के संभावित कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य	अध्ययन अनुमान
1.	छात्रों का शैक्षणिक स्तर न्यून होना	कक्षा परख द्वारा	तथ्य
2.	कार्यपुस्तिकाओं के कार्य प्रति छात्रों में अरूचि	अवलोकन द्वारा	तथ्य
3.	कार्यपुस्तिकाओं का व्यवहारिक रूप में उपयोग न होना	कार्यपुस्तिका निरक्षण	तथ्य

क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

1. विभिन्न प्रकार की गतिविधियों व सरल शिक्षण विधि द्वारा व नये–नये नवाचारों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारा जा सकता है।

2. कार्यपुस्तिकाओं में दिये गये गृहकार्य को विभिन्न रूचिकर गतिविधियों से करवाकर छात्रों की कार्यपुस्तिकाओं में रूचि बढ़ा सकते है।

3. शिक्षक को कार्यपुस्तिकाओं की उपयोगिता के महत्व बताकर इसे व्यवहारिक रूप में क्रियान्वयन करवा सकता हैं।

क्रियात्मक शोध कार्ययोजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन :–

क्र.स.	कार्ययोजना	उपकरण	समय
1.	स्टाफ बैठक में कार्यपुस्तिकाओं के समुचित उपयोग पर चर्चा।	स्टाफ बैठक	1 दिन
2.	कार्यपुस्तिकाओं का शिक्षक मार्गदर्शिका के अनुसार गतिविधियां करवाकर शिक्षण करवाना।	कार्यपुस्तिकाएं	3 दिन

3.	कार्यपुस्तिकाओं की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से करवाना।	कक्षा–कक्षा, चार्ट, खेल मैदान	3 दिन

गतिविधि 1 :–

सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य के नेतृत्व में स्टाफ बैठक का आयोजन किया गया। स्टाफ बैठक में कार्यपुस्तिकाओं का सार्थक व व्यावहारिक रूप में उपयोग किस प्रकार किया जाए इस पर चर्चा की गई। पूर्व परख व पश्च परख के आयोजन पर भी चर्चा की गई।

गतिविधि 2 :–

विद्यालय में कार्यपुस्तिकाओं में दिये गये गृहकार्य को निम्न गतिविधियों के माध्यम से करवाकर छात्रों में कार्यपुस्तिकाओं के प्रति रूचि पैदा की। छात्रों को विभिन्न ग्रुप में बांटकर उनमें हिंदी व अंग्रेजी शब्दार्थो की अंत्याक्षरी करवाई गई। छात्रों को चार्ट पर संज्ञा, सर्वनाम व नये–नये शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाना आदि कार्य करवाये गये। पानी की टंकी, कक्षा–कक्ष, बेंच का उपरी आवरण आदि वस्तुओं के अवलोकन से घन, घनाभ, आयत आदि को समझाया व छात्रों को वस्तुओं से विभिन्न आकृतियां पहचानकर लिखने हेतु कहा गया।

गतिविधि 3 :–

शिक्षक को कार्यपुस्तिकाओं में दी गई गतिविधियां व उसके महत्व के बारे में बताया गया शिक्षक को प्रेरित किया गया कि कार्यपुस्तिकाओं के माध्यम से छात्रों में उत्पन्न अधिगम अंतराल को दुर किया जा सकता हैं। इसके विभिन्न विषयाध्यापकों द्वारा कार्यपुस्तिकाओं का व्यवहारिक उपयोग करने लगे व दिये गये गृहकार्य को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से करवाया जाने लगा।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध को पूर्ण करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग किया गया।

सांख्यिकी :–

पूर्व परख

क्र.स.	कक्षा	नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक
1.	6	माया	20	6
2.	6	तनिषा	20	6
3.	6	विरेन्द्र	20	8
4.	6	संजय	20	4
5.	6	लालचन्द	20	4
6.	6	युवराज	20	4
7.	6	दिनेश	20	5
8.	6	ओमप्रकाश	20	5
9.	6	भगवती	20	10
10.	6	लक्ष्मी	20	8

पश्च परख

क्र.स.	कक्षा	नाम	पूर्णांक	प्राप्तांक

1.	6	माया	20	12
2.	6	तनिषा	20	12
3.	6	विरेन्द्र	20	12
4.	6	संजय	20	12
5.	6	लालचन्द	20	14
6.	6	युवराज	20	16
7.	6	दिनेश	20	13
8.	6	ओमप्रकाश	20	16
9.	6	भगवती	20	18
10.	6	लक्ष्मी	20	18

वर्ग अन्तराल पश्च के आधार पर

क्र.स.	वर्ग अन्तराल	बच्चों की संख्यां
1.	0–4	0
2.	5–8	0
3.	9–12	4
4.	13–16	4
5.	17–20	2

दत विश्लेषण :–

वर्ग अन्तराल प्राप्तांक	बच्चों की संख्यां पूर्व परीक्षण	प्रतिशत	बच्चों की संख्यां पश्च परख	प्रतिशत
0–4	3	30	0	0
5–8	6	60	0	0
9–12	1	10	4	40
13–16	0	0	4	40
17–20	0	0	2	20

वर्ग अन्तराल प्राप्तांक प्रतिशत	बच्चों की संख्यां पूर्व परीक्षण	प्रतिशत	बच्चों की संख्यां पश्च परख	प्रतिशत
0–25	5	50	0	0
26–50	5	50	0	0
51–75	0	0	6	60
76–100	0	0	4	40

निष्कर्ष :–

क्रियात्मक शोध के आंकड़ों व अनुभव के आधार यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्यपुस्तिकाओं से रूचिकर शिक्षण कार्य करवाने से छात्रों में कार्यपुस्तिकाओं में कार्य करने के प्रति रूचि बढ़ी है। पूर्व परीक्षण में 25 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्यां 5 व 50 प्रतिशत तक ही सभी छात्रों के अंक थे। पश्च परीक्षण में 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 0 व 50 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्यां 10 थी। अतः क्रियात्मक शोध में कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग गतिविधियों से करने पर यह उपयोगी रहा है।

सुझाव :–

कार्यपुस्तिकाओं में दिये गये गृहकार्य को रूचिपूर्ण तरह से करवाकर छात्रों के अधिगम अंतराल को दुर कर सकते हैं। विभिन्न गतिविधियों का उपयोग करते हुए छात्रों की कार्यपुस्तिकाओं के प्रति रूचि बढ़ाई जा सकती है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''व्यावहारिक जीवन में एकिक नियम, लाभ–हानि व सरल ब्याज संबंधित गणितीय संक्रियाओं को व्यावहारिक जीवन से संलग्न कर, संज्ञानात्मक समझ उत्पन्न करने का प्रयास''।

अनुसंधानकर्ता

श्री जगवीर सिंह पूनियां, अध्यापक., राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मघाऊ, राजगढ़, चूरू

शीर्षक :– ''व्यावहारिक जीवन में एकिक नियम, लाभ–हानि व सरल ब्याज संबंधी गणितीय संक्रियाओं को व्यावहारिक जीवन संलग्न कर संज्ञानात्मक समझ उत्पन्न करने का प्रयास।

पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं औचित्य :–

छात्र हमेशा गणित विषय के किसी भी सवाल हल करते समय छोटी–छोटी गलतियां करते है, जिससे पूरा सवाल गलत हो जाता है इसका मूल कारण मूलभूत संक्रियाओं का ज्ञान न होना। मैनें विद्यार्थियों

में व्यावहारिक जीवन से संबंधित गणितीय समस्याएं हल करवाने पर पाया गया कि उनमें गणित के प्रति रूचि का अभाव है तथा पूर्व ज्ञान की कमी है। शोधकर्ता के रूप में मेरा मत है कि मूलभूत संक्रियाओं को व्यावहारिक जीवन में अधिगम गुणवता को बढावा जाए तो छात्र ये गलतियां नही करेगा अतः इस विषय पर प्रभावी निदात्मक परीक्षण कर उपचारात्मक शिक्षण करवाने की आवश्यकता महसूस की गई।

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों में व्यावहारिक जीवन में गणितीय समस्याओं को समझने व हल करने की दक्षता का विकास करना।

2. विद्यार्थियों की तार्किक शक्ति का विकास करना।

3. विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति रूचि जागृत करना।

4. छात्रों में आसानी से गणित के सवाल कर लेने का कौशल पैदा करना।

संभावित कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.स.	कारण	प्रमाण / साक्ष्य
1.	विषय के प्रति अरूचि	वार्तालाप
2.	व्यावहारिक जीवन से संबंधित गणितीय समस्याएं गलत हल करना	औपचारिक आकलन कक्षाध्यापक के दौरान समस्याएं हल नही करवाना
3.	इकाई परखों में छात्रों द्वारा कम आना	परीक्षा पुस्तिका

परिकल्पनाएं :–

1. विद्यार्थी ऐकिक नियम से संबंधित व्यावहारिक प्रश्न शीघ्र हल कर सकेंगे।

2. विद्यार्थी लाभ–हानि से संबंधित व्यावहारिक प्रश्न शीघ्रता से हल करने में दक्ष होंगें।

3. विद्यार्थी सरल ब्याज से संबंधित व्यावहारिक प्रश्न भी कर सकेगें।

4. विद्यार्थी गणितीय संक्रियाओं की समझ विकसित हो सकेगी।

उपकरण :– पूर्व परख प्रश्न, पश्च परख पत्र, अवलोकन आदि।

सीमांकन / परिसीमन :– रा.उ.मा.वि., कालरी, राजगढ़ कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित।

न्यादर्श :– कक्षा 8 के विद्यार्थी।

समय :– एक सप्ताह दो कालांश।

विधि :– उपचारात्मक विधि।

क्रियात्मक कार्ययोजना क्रियान्वयन :–

क्र.स.	गतिविधियां	समय	साधन / उपकरण
1.	पूर्व परीक्षण / वर्तमान स्थिति का आकलन	1 दिन	प्री टेस्ट
2.	निदानात्मक कार्य – 1. प्रतिदिन विद्यार्थियों को लाभ–हानि से संबंधित व्यावहारिक प्रश्न हल करने का अभ्यास करवाना 2. भारतीय मुद्रा के प्रचलित सिक्कें एवं नोट से व्यावहारिक अधिगम करवाना	3 दिन	कक्षा में पूछकर

	3. वस्तुओं के किसी भाग को गणितीय रूप में प्रदर्शित करना 4. गणित शिक्षण में टीएलएम सामग्री बनवाकर शिक्षण		
3.	उपचारात्मक कार्य :– विद्यार्थियों को गणित शिक्षण के माध्यम से व्यावहारिक जीवन लाभ–हानि, एकिक नियम, गणितीय संक्रियाओं, नियमित अभ्यास गतिविधि करवाकर नवाचार	3 दिन	पश्च परख

दत संकलन :–

सारणी क्रमांक 1

इकाई मूल्यांकन के आधार पर (ग्रेड प्रणाली)

क्र.स.	ग्रेड	प्रथम मूल्यांकन	द्वितीय मूल्यांकन	तृतीय मूल्यांकन
1.	उत्कृष्ठ (89–100) ए प्लस	3	5	3
2.	बहुत अच्छा (74–89) ए	9	7	10
3.	अच्छा (55–74) बी	8	6	5
4.	औसत (33–55) सी	–	2	2
5.	कमजोर (33 से कम) डी	–	–	–

सारणी क्रमांक 2

मूल्यांकन पूर्व एवं पश्च परख के आधार पर

क्र.स.	पूर्व जांच		पश्च जांच	
1.	ए प्लस	–	ए प्लस	1
2.	ए	–	ए	12
3.	बी	1	बी	6
4.	सी	12	सी	1
5.	डी	7	डी	–

दत विश्लेषण :–

क्रियात्मक अनुसंधान के दत संकलन सारणी के आकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि पूर्व जांच एक छात्र के बी ग्रेड, 12 छात्रों के सी ग्रेड व 7 छात्रों के डी ग्रेड हैं। इससे स्पष्ट है कि व्यावहारिक जीवन में गणितीय समस्याओं को हल करने की दक्षता बहुत कम थी। उपचारात्मक शिक्षण के बाद ली इकाई का परिणाम निम्न है। प्रथम इकाई परख में ऐकिक नियम के अध्यापन के पश्चात 3 छात्रों के ए प्लस, 9 छात्रों के ए तथा 8 छात्रों ने बी ग्रेड प्राप्त की। द्वितीय इकाई परख में लाभ–हानि, प्रतिशत लाभ–हानि का अध्यापन करवाने के पश्चात 5 छात्रों ने ए प्लस, 7 छात्रों ने ए, 6 छात्रों ने बी व 2 छात्रों ने सी ग्रेड प्राप्त की । तृतीय इकाई परख में सरल ब्याज।

निष्कर्ष :–

छात्र एकिक नियम, प्रतिशत, लाभ–हानि व सरल ब्याज से संबंधित व्यावहारिक प्रश्नों को लिखित एवं मौखिक रूप से शीघ्रता पूर्वक हल करते है। मूलभूत संक्रियाओं को पृथक–पृथक करके शिक्षण करवाना

रूचिकर लगता है। इससे छात्रों में अधिगम सुगम होता है। छात्रों को व्यावहारिक जीवन से संबंधित समस्याओं को हल करवाने से अधिगम सरल एवं रूचिपूर्वक हो जाता है।

सुझाव :–

छात्रों को व्यावहारिक जीवन से संबंधित समस्याओं को हल करवाने से अधिगम सरल व रूचिपूर्वक हो जाता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र – 2021–22

अनुसंधान का शीर्षक

''उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवतापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास ''।

अनुसंधानकर्ता

श्री सुशील निर्वाण, व.अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भादासर दिखनादा, सरदारशहर, चूरू

1. शीर्षकः– "उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवत्तापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास"

2. अनुसंधान की पृष्ठभूमिः– " सा विद्या या विमुक्तये " अर्थात विद्या वह है जो मुक्त करे। विद्या के बिना मनुष्य समाज अधूरा है। ज्ञानार्जन एवं अधिगम विद्यार्थियों में सरल, सहज एवं गतिविधि आधारित सम्यक हो इसके लिए राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली एवं राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर द्वारा सतत् नवाचार के आयाम स्थापित किये जाते रहे है, गत दो वर्षों से कोविड–19 महामारी के प्रकोप से विद्यार्थियों में आये अधिगम अन्तराल को कम

करने एवं अधिगम प्रतिफल के आधार पर सभी विद्यार्थियों को कक्षा स्तर तक लाने के लिए राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर एवं राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर द्वारा एन ई पी 2020 के अनुसार दक्षता आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, वज्र एवं उपचारात्मक कार्यक्रम को समर्थन करने के लिए समग्र सामग्री को समावेशित कर एवं विद्यार्थी प्रगति को ट्रैक करने के लिए बेसलाईन रचनात्मक आंकलन और एन्डलाईन मूल्यांकन के उद्देश्य से कक्षा–3 से 8 तक कार्यपुस्तिकाएं तैयार की गई है। ये कार्यपुस्तिकाएं एफ एल एन को ध्यान में रखकर हिन्दी, अंग्रेजी व गणित विषय की ही तैयार की गई है।

प्रस्तुत अनंसंधानिक कार्य में शीर्षक उच्च प्राथमिक कक्षाओं को संदर्भित किया गया है अर्थात कक्षा 6, 7 एवं 8 में कक्षा –6 व 7 की समेकित कार्यपुस्तिका का नाम प्रवाह है एवं 8 की कार्यपुस्तिका का नाम प्रखर दिया गया है।

मेरे अनुसंधान शीर्षक " उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्य पुस्तिकाओं के गुणवत्तापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास " में मेरे द्वारा अनुभव किया गया कि विद्यार्थी , कार्यपुस्तिका का उपयोग अधिगम का लक्ष्य न लेकर गृहकार्य तक ही इसका सीमांकन करता है। अत– कार्यपुस्तिका का गुणवत्तापूर्ण उपयोग सुनिश्चित हो जिससे विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि में अभिवृद्धि की जावे को उद्देश्य बनाकर मुझे यह अनुसंधानिक शीर्षक पर कार्य करने का गुरूत्तर कार्य डाईट द्वारा सौंपा गया है।

3. अनुसंधान का औचित्यः– वर्तमान समय में उक्त समस्या प्रासंगिक है, जहां गत दो वर्षों में कोविड–19 वैश्विक महामारी के कारण शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य कक्षा– कक्षीय शिक्षण–अधिगम गतिविधियां संचालित नहीं हुयी है एवं अधिगम अन्तराल में वृद्धि हुयी है। सभी प्रभावित विद्यार्थियों को ट्रैक पर लाने के लिए एल ओ को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों का अधिगम स्तर, कक्षा स्तर के अनुरूप रहे, के निहितार्थ सन्दर्भित अनुसंधान की आवश्यकता महसूस हुयी।

4. अनुसंधान का उद्देश्यः– मेरे अनुसंधान शीर्षक में उपस्थित दक्ष प्रश्नों के समाधान को खोजने हेतु मेरे द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य परिलक्षित किये गये है।

1 विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर की जानकारी प्राप्त करना।

2 विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में आने वाली बाधाओं की जानकारी करना।

3 विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्यों में कार्यपुस्तिका के उपयोग का पता करना।

4 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में आने वाली बाधाओं को कार्यपुस्तिकाओं द्वारा दूर करने का प्रयास।

5. अनुसंधान की परिकल्पनाः– मेरे अनुसंधान शीर्षक " उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवत्तापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास " में उपस्थित दक्ष प्रश्नों के समाधान को खोजने हेतु मेरे द्वारा निम्न परिकल्पनाएं निर्धारित की गई है।

1 विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को कार्यपुस्तिका के गुणवतापूर्ण उपयोग द्वारा प्रोन्नत किया जा सकता है।

2 शिक्षक द्वारा कक्षा– कक्ष शिक्षण में कार्यपुस्तिकाओं के समुचित मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों में अधिगम व वस्तुनिष्ठता में वृद्धि की जा सकती है।

6 समस्या के संभावित कारण एवं साक्ष्यः– मेरे अनुसंधान कार्य में साक्ष्यों के आधार पर निम्न संभावित कारण स्पष्ट किये गये।

क्र. सं समस्या के संभावित कारण साक्ष्य

1	कार्यपुस्तिका अधिगम प्रक्रिया न मानकर गृहकार्य रूप में लिया जाना	wb अवलोकन, वार्तालाप, साक्षात्कार, अभिभावक मत
2	अनियमित विद्यार्थी की wb के मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्या	विद्यार्थी उपस्थिति रजिस्टर, शिक्षक एवं विषयाध्यापक मत
3	wb सत्र के मध्य एवं अन्त में आने की समस्या	wb वितरण रजिस्टर

7. परिकल्पना परीक्षण हेतु कार्ययोजनाः– परिकल्पना परीक्षण हेतु निम्न कार्ययोजना को मूर्त रूप दिया जाना है।

क्र सं.	अपेक्षित क्रियाएं	कार्य जो किया जाना	साधन/उपकरण	समयावधि
1	अवलोकन	कक्षा–6,7 एवं 8 की कार्यपुस्तियां प्रवाह एवं प्रखर का अवलोकन (हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित)निद्यनात्मक परीक्षण	कार्यपुस्तिकाएं	1 दिन
2	पूर्व परीक्षण	प्रवाह एवं प्रखर का आधार मानकर हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित विषय के प्रश्नों का समेकन कर समेकित कर पूर्व परीक्षण प्रश्न–पत्र तैयार करना परीक्षण करना	प्रश्नावली प्रश्न–पत्र	1 दिन
3	परिचर्चा	पूर्व परीक्षण में ज्ञात समस्याओं का समाधान करने हेतु सुधारात्मक उपचारात्मक करना	उतर–पुस्तिका एवं कार्यपुस्तिकाएं	1 दिन
4	पश्च परीक्षण	पश्च परीक्षण के आधार पर परीक्षण करना	प्रश्नावली प्रश्न–पत्र	1 दिन

8. प्रयुक्त अनुसंधानिक उपकरणः– मेरे अनुसंधान के विषयः– " उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवत्तापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास" में सम्बन्धित कारण एवं समस्या से सम्बन्धित जानकारी संकलनार्थ मेरे द्वारा तैयार निम्न अनुसंधानिकी उपकरणों को प्रयुक्त किया गया।

1 प्रश्नावली (कक्षा–6,7 एवं 8 के विद्यार्थियों के हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित विषय के लिए पूर्व एवं पश्च परीक्षण हेतु)

2 मौखिक परीक्षण (उपर्युक्त वर्णित कक्षा एवं विषय हेतु)

3 शिक्षक अभिमतावली /परिचर्चा /वार्तालाप

उक्त अनुसंधान उपकरणों के प्रयोग से अन्वेषण कार्य में प्राप्त दतों का संकलन कर ,इनके आधार पर अंकन, सारणीयन एवं ग्राफिक चित्रांकन किया गया। उक्त तथ्यों के आधार पर मेनें मेरे शोधकार्य को पूर्ण किया है।

9. अनुसंधान का क्षैत्रः– मेरे अनुसंधान शीर्षक " उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवतापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास " का क्षैत्र शैक्षिक है।

10 अनुसंधान कार्य का परिसीमनः– अनुसंधान का परिसीमन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बुचावास तहसील– तारानगर जिला–चूरू , राजस्थान तक सीमित है।

11 अनुसंधान का न्यादर्शः– मेरे अनुसंधान का न्यादर्श परिसीमत विद्यालय की कक्षा –6 के 5 , कक्षा–7 के 5 एवं कक्षा–8 के 6 विद्यार्थियों का श्रेणीवार यादृच्छिक चयन।

12 अनुसंधान की विधिः– मेरे अनुसंधानिक शीर्षक में सन्दर्भित समस्या समाधान हेतु दस्तावेज अवलोकन, प्रश्नावली, मौखिक परीक्षण, परिचर्चा एवं साक्षात्कार तथा उपचारात्मक कार्य जैसी अनुसंधानिक विधियों को प्रयुक्त में लाया गया।

13 दत संकलनः– मैने अनुसंधान कार्य के लिए उपस्थित दक्ष प्रश्नों के समाधान खोजने के क्रम में निम्नलिखित दत संकलन किया है।

सारणी–1 :–पूर्व परीक्षण

.विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	6th			विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	7th			विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	8th		
1–B	25	07	28	6– B	25	14	56	11– B	30	09	30
2–G	25	11	44	7– G	25	20	80	12– B	30	09	30
3–B	25	12	48	8– G	25	16	64	13– B	30	04	13
4–G	25	12	48	9– B	25	20	80	14– G	30	10	33
5–G	25	17	68	10–B	25	13	52	15– G	30	05	17
								16– G	30	06	20

सारणी–2:– पश्च परीक्षण

.विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	6th			विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	7th			विद्यार्थी क्र. सं. व श्रेणी	8th		
1–B	25	16	64	6– B	25	21	84	11– B	30	25	83
2–G	25	22	88	7– G	25	25	100	12– B	30	26	87
3–B	25	19	76	8– G	25	23	92	13– B	30	12	40
4–G	25	15	60	9– B	25	25	100	14– G	30	20	67
5–G	25	22	88	10–B	25	18	72	15– G	30	15	50
								16– G	30	23	77

सारणी –3

कक्षा–6 व 7

वर्ग अन्तराल	परीक्षार्थी संख्या		परीक्षार्थी संख्या	
0–20	0	0	3	0
20–40	1	0	3	1
40–60	5	1	0	1
60–80	4	3	0	2
80–100	0	6	0	2
योग	10	10	06	06

14 दत विश्लेषणः– मेरे द्वारा लिए गये दत संकलन का विश्लेषण निम्न प्रकार से है।

मेरे शीर्षक " उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कार्यपुस्तिकाओं के गुणवतापूर्ण उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने का प्रयास" की परिकल्पना का हल ढुंढने के क्रम में मेरे द्वारा संकलित दतों का विश्लेषण निम्न लिखित है।कक्षा–6 व 7 में 20 प्रतिशत से कम पूर्व व पश्च परीक्षण में विद्यार्थियों की संख्या शून्य रही (21 – 40 प्रतिशत पूर्व परीक्षण में 1 जबकि पश्च परीक्षण में विद्यार्थियों की संख्या शून्य रही है। कक्षा– 6 व 7 में (41–60) अंक श्रेणी में पूर्व परीक्षण में 5 एवं पश्च परीक्षण में 1 रही। कक्षा –6 व 7 में (61–80) अंक श्रेणी में पूर्व परीक्षण में संख्या–4 वही पश्च परीक्षण में 3 रही। कक्षा 6 व 7 में (80–100) प्रतिशत श्रृखला में पूर्व परीक्षण में शून्य जबकि पश्च परीक्षण में 6 रही।

कक्षा 8 में 20 प्रतिशत अंक तक पूर्व परीक्षण में विद्यार्थियों की संख्या–3 जबकि पश्च परीक्षण में शून्य रही। 21–40 प्रतिशत श्रृंखला में पूर्व परीक्षण में 3 वही पश्च परीक्षण में 1 रही। 41–60 प्रतिशत में पूर्व परीक्षण में 0 एवं पश्च परीक्षण में 1 रही है। प्रतिशत श्रृंखला 61–80 में पूर्व परीक्षण में 0 एवं पश्च परीक्षण में 2 रही। 81–100 प्रतिशत श्रृंखला में पूर्व परीक्षण 0 जबकि पश्च परीक्षण में संख्या 2 रही।

कक्षा 6, 7, 8 के पूर्व परीक्षण का गणितिय माध्य–56 अंक रहा। तथा कक्षा 6, 7,8 के पश्च परीक्षण का गणितिय माध्य–80 अंक रहा। गणितिय माध्य के परिकलन से हमें पूर्व परीक्षण से प्राप्त माध्य के आंकडों व पश्च परीक्षण के माध्य के आंकडों में 24 अंकों की वृद्धि पायी।

15 निष्कर्षः– मेरे द्वारा ली गयी परिकल्पना विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को कार्यपुस्तिका के गुणवत्तापूर्ण उपयोग द्वारा प्रोन्नत किया जा सकता है, दत संकलन के विश्लेषण के पश्चात सही सिद्ध होती है।

मेरे द्वारा ली गयी दूसरी परिकल्पना शिक्षक द्वारा कक्षा– कक्ष शिक्षण में कार्यपुस्तिकाओं के समुचित मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों में अधिगम व वस्तुनिष्ठता में वृद्धि की जा सकती है दत संकलन के विश्लेषण के पश्चात सही सिद्ध होती है।

16 सुझावः–

1 कार्यपुस्तिकाओं का औचित्य पूर्व उपयोग होना चाहिए।

2 कार्यपुस्तिकाओं की उपलब्धता सत्रारम्भ से होनी चाहिए।

3 शिक्षकों को कार्यपुस्तिकाओं के उपयोग हेतु समय–समय विभागिय प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

4 विद्यार्थियों को कार्यपुस्तिका उपयोग व उसको महत्व को समय–समय पर प्रार्थना– सभा में जागरूक करना चाहिए।

5 शिक्षकों को कार्यपुस्तिका मूल्यांकन करते समय विद्यार्थी के पूर्व लिखित कार्यों से तुलनात्मक सामजस्य करना चाहिए।

6 WB सम्बंधी विभागीय नवाचार को महज गृहकार्य न मानकर शैक्षिक प्रोन्नति का साधन माना जाना चाहिए।

प्रायोजना में प्रयुक्त शब्द परिभाषीकरणः–

1 lg-learning gape अधिगम अन्तराल

2 lo's- learning outcomes अधिगम प्रतिफल

3 wb- work book कार्यपुस्तिका

4 fln- foundational literacy and numeracy बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

5 nep- national education policy राष्ट्रीय शिक्षा नीति

6 covid-19 - वैश्विक महामारी जो 2019 में आयी जिसने विश्व की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को हिला दिया।